राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उतरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उतराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रसारीत

क्रांति समय
SURESH MAURYA
(Chief Editor)
M. 98791 41480
Working. off.: STPI-SURAT, GUJARAT-395023 (Software Technology Park of India, Surat.
www.krantisamay.com
www.krantisamay.in
krantisamay@gmail.com

सुरत-गुजरात,संस्करण शनिवार,०१मई २०२१ वर्ष-४, अंक -९७ पृष्ठ-०८ मूल्य-०१रूपये

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आयरलैंड और हांगकांग ने भारत को भेजे मेडिकल उपकरण, अमेरिका की तरफ से भी मदद जारी

नई दिल्ली। कोरोना संकट का सामना कर रहे भारत की मदद के लिए अन्य देशों का भी सहयोग जारी है। आयरलैंड, हांगकांग और अमेरिका की तरफ से भारत को मेडिकल उपकरण भेजे गए हैं। आयरलैंड ने संकट की घड़ी में भारत का साथ देने के लिए 700 ऑक्सीजन कंटेनर्स यूनिट और 365 वेंटिलेटर भेजे हैं। वहीं

हांगकांग की तरफ से भी भारत की मदद के लिए मेडिकल उपकरण भेजे गए हैं। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने बताया कि हांगकांग की तरफ से 300 ऑक्सीजन कंसेनटेटर्स अन्य मेडिकल उपकरण इंडिगो की फ्लाइट से दिल्ली भेजे गए हैं। मंत्री ने आगे कहा कि यह आपूर्ति आगे चल रहे सभी प्रयासों को आगे बढ़ा रही हैं जो पहले से ही हैं।

अमेरिका की तरफ से मदद जारी-उधर, अमेरिका की तरक से भारत की मदद जारी है। अमेरिकी वायु सेना का विमान सी -17 ग्लोबमास्टर III, दूसरा अमेरिकी वायु सेना का वाहक कोविड-19 राहत आपूर्ति से भरा हुआ है भारत आने आ रहा है। विमान ने नई दिल्ली के लिए कैलिफोर्निया में ट्रैविस एयर फोर्स बेस को छोड़ दिया। बता दें कि भारत इस वक्त कोरोना संकट के चलते पैदा हुए हालात के चलते काफी बुरी स्थिति में है। यहां पर एक दिन में तीन लाख से ज्यादा मामले पिछले कई दिनों से दर्ज हो रहे हैं, जिसके बाद अस्पतालों की में ऑक्सीजन की कमी से मरीजों की मौत तक हो रही है। ऐसे में अन्य देशों ने भी भारत की मदद के लिए हाथ बढ़ाया है। इससे पहले फ्रांस भी भारत को बीते दिन मेडिकल उपकरण भेज चुका है।

कोरोना का बढ़ता कहर

न्यूज एंकर रोहित सरदाना ने 42 साल की उम्र में आखिरी सांस ली

नोएडा। आजतक न्यूज चैनल के सीनियर एंकर रोहित सरदाना का शुक्रवार को कोरोना के चलते निधन हो गया। 42 साल के रोहित ने नोएडा के एक निजी अस्पताल में आखिरी सांस ली। जैसे ही उनके निधन की खबर सामने आई हर कोई स्तब्ध रह गया। चैनल के लाईव शो में रोहित के साथी एंकर्स चित्रा त्रिपाठी, अंजना ओम कश्यप और सईद अंसारी रो पड़े। एक-ए क करके सभी ने रोहित से जुड़ी यादों को शेयर किया।

रिकवर हो रहे थे सरदाना, आखिरी ट्वीट में भी लोगों की मदद करते दिखे

● रोहित एक हफ्ते पहले सक्रमित पाए गए थे। जिसके बाद से उनका इलाज चल रहा था। साथी एंकर चित्रा त्रिपाठी ने बताया कि दो दिन पहले ही रोहित ने बताया था कि वह रिकवर हो रहे हैं। जल्द ही वापस ऑफिस जॉइन करेंगे, लेकिन अचानक इस खबर ने सबको झकझोर दिया है। रोहित हमेशा लोगों की मदद करते रहे। आखिरी ट्वीट रोहित ने गुरुवार की रात 8 बजे की है। इसमें भी उन्होंने कानपुर की एक कोरोना मरीज के लिए मदद मांगी।

शूटर दादी चंद्रो तोमर का 89 साल की उम्र में निधन

वहीं शूटर दादी के नाम से मशहूर निशानेबाज चंद्रो तोमर का भी कोरोना संक्रमण के चलते शुक्रवार को निधन हो गया। वे 89 साल की थीं। मेरठ के मेडिकल कॉलेज में उनका इलाज चल रहा था। चंद्रो उत्तर प्रदेश के बागपत में रहती थीं। फिल्म सांड की आंख चंद्रो तोमर की रियल लाइफ पर ही बेस्ड है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत कई हस्तियों ने जताया शोक

पत्रकार रोहित एंकर के निधन पर मीडिया जगत के साथ-साथ राजनीतिक, उद्योग, खेल और एंटरटेनमेंट जगत में भी शोक की लहर दौड़ पड़ी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पर लिखा, रोहित सरदाना ने हम सभी को अकेला छोड़ दिया। ऊर्जा से भरपूर वो हमेशा से देश की प्रगति के लिए सोचते थे। एक दयालु आत्मा के रूप में उन्हें हमेशा से याद किया जाएगा। उनके असामयिक निधन ने मीडिया जगत में एक बहुत बड़ा शून्य छोड़ दिया है। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति संवेदना। ओम शांति। इसके अलावा गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों और राजनीतिक हस्तियों ने रोहित के निधन पर शोक जताया।

भारत की स्थिति होगी

अनुमान- देश को 5 लाख IC बेड और 3.5 लाख मेडिकल स्टाफ की होगी जरूरत

नई दिल्ली। कोरोना कहर के बीच प्रख्यात सर्जन डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी ने स्थिति और बदतर होने का पूर्वानुमान लगाया है। डॉ देवी प्रसाद शेट्टी के मुताबिक आने वाले कुछ हफ्तों के दौरान भारत में अतिरिक्त पांच लाख आईसीयू बिस्तरों, दो लाख नर्सों और डेढ़ लाख डॉक्टरों की जरूरत पड़ेगी। इसके साथ ही इस स्थिति से निपटने के कुछ सुझाव भी दिए हैं। डॉ.शेट्टी ने कहा कि मौजूदा समय में भारत में 75 से 90 हजार आईसीयू बेड हैं और वे महामारी की दूसरी लहर के चरम पर पहुंचने से पहले ही भर चुके हैं। उन्होंने कहा कि भारत में रोजाना 3.5 लाख नए मामले आ रहे हैं और कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि यह संख्या महामारी के चरम पर पहुंचने पर प्रति दिन पांच लाख हो सकती है। नारायण हेल्थ फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं संस्थापक डॉ. शेट्टी ने सिम्बायोसिस स्वर्ण जयंती व्याख्यान में कहा कि प्रत्येक संक्रमित मरीज के साथ पांच से 10 लोग ऐसे हैं जिनकी जांच नहीं हो रही है। इसका अभिप्राय है कि भारत में अब रोजाना 15 से 20 लाख लोग संक्रमित हो रहे हैं। सांख्यिकी के मुताबिक उम्र से परे पांच प्रतिशत संक्रमितों को आईसीयू बिस्तर की जरूरत होती है औसतन 10 दिन मरीज आईसीयू में भर्ती रहता है।

78 प्रतिशत विशेषज्ञ डॉक्टरों की पहले से है कमी-

डॉ. शेट्टी ने कहा कि महामारी शुरू होने से पहले ही सरकारी अस्पतालों में 78 प्रतिशत विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी थी। उन्होंने कहा कि हमें कम से कम दो लाख नर्सों और डेढ़ लाख डॉक्टरों की अगले कुछ हफ्तों में जरूरत है, जो अगले एक साल तक कोविड-19 मरीजों का इलाज कर सके। मौजूदा महामारी करीब चार से पांच महीने तक रहेगी और उसके बाद हमें तीसरी लहर के लिए तैयार रहना चाहिए।

2.20 लाख नर्सिंग विद्यार्थी आ सकते हैं काम-डॉ.शेट्टी ने इस समस्या का समाधान भी पेश किया है। उन्होंने कहा कि भारत में करीब 2.20 लाख नर्सिंग के स्टूडेंट्स हैं, जिन्होंने अलग-अलग नर्सिंग स्कूलों में तीन वर्षीय जनरल नर्सिंग ऐंड मिडवाइफरी या चार वर्षीय बीएससी सिलेबस पूरा कर लिया है और परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं।

मरीजों की जान बचाएंगे रिटायर्ड ड्राइवर, ऑक्सीजन टैंकरों को पहुंचाने के लिए सरकार ने वापस

नई दिल्ली। देश में मेडिकल ऑक्सीजन इमरजेंसी से निपटने के लिए सरकार कई मोर्चों पर काम कर रही है। संयंत्रों से ऑक्सीजन उत्पादन बढ़ाने, नाइट्रोजन-आर्गन टैंकरों को परिवर्तित कर ऑक्सीजन आपूर्ति में लगाने, ऑक्सीजन टैंकरों को आयात करने आदि एक्शन प्लान को लागू किया जा रहा है। पर सरकार की इस मोर्चाबंदी में विशेष ऑक्सीजन टैंकर चलाने वाले प्रशिक्षित ड्राइवर कमजोर कड़ी साबित हो रहे हैं। इसे देखते हुए सरकार ने सेवानिवृत्त प्रशिक्षित ड्राइवरों को वापस काम पर बुलाने का फैसला किया है। सरकार के प्रयासों का नतीजा है कि पिछले कुछ दिनों में न सिर्फ मेडिकल ऑक्सीजन का उत्पादन बढ़ गया बल्कि ऑक्सीजन ढोने वाले टैंकरों की संख्या 5000 से बढ़कर 12000 हो गई। ऑक्सीजन टैंकरों की कमी को देखते हुए सरकार ने नाइट्रोजन व आर्गन टैंकरों में परिवर्तन कर ऑक्सीजन ढोने के आदेश पहले ही दे दिए हैं। देश में नाइट्रोजन टैंकरों की संख्या 765 है, जोकि 8345 मीट्रिक टन गैस की आपूर्ति कर सकते हैं। इसी प्रकार 434 आर्गन टैंकरों की गैस आपूर्ति की क्षमता 7642 मीट्रिक टन है। योजना के मुताबिक, 1199 नाइट्रोजन-आर्गन टैंकरों को चरणबद्ध

तरीके से परिवर्तित कर ऑक्सीजन की ढुलाई में लगाया गया। लेकिन ऑक्सीजन टैंकर चलाने के लिए प्रशिक्षित ड्राइवरों की कमी एक समस्या है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देश में एक करोड़ व्यावसायिक वाहनों को चलाने के लिए कुल 22 लाख ड्राइवरों की कमी है। इसमें प्रशिक्षत ड्राइवरों का खासा अभाव है।

विशेष प्रशिक्षण की जरूरत

जानकारों का कहना है कि आम ट्रक एवं टैंकर के ड्राइवर में ऑक्सीजन टैंकर चलाने की काबिलियत नहीं होती है। ऑक्सीजन टैंकर चलाने के लिए विशेष प्रशिक्षिण की जरूरत होती है। इसे देखते हुए सरकार ने 27 अप्रैल को देश में ट्रांसपोर्ट सेक्टर की शीर्ष संस्था ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (एआईएमटीसी) से सेवानिवृत्त प्रशिक्षित ड्राइवरों को ऑक्सीजन टैंकर ढुलाई के काम पर बुलाने को कहा है।

तैनाती से पहले मेडिकल जांच

एआईएमटीसी के अध्यक्ष कुलतार सिंह ने बताया कि सरकार का संदेश सेवानिवृत्त ड्राइवरों के पास भेज दिया गया है। उनकी मेडिकल जांच कराने के बाद काम पर लगाया जाएगा। ऑक्सीजन के संकट को देखते हुए टैंकरों पर दो ड्राइवरों की ड्यूटी लगाई जा रही है। इसके अलावा टैंकर पर एक मेकेनिक भी रहता है।

लॉकडाउन में चल रहा था हुक्का बार, रेड में मालिक समेत 17 गिरफ्तार

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के पश्चिम विहार वेस्ट इलाके में पुलिस ने एक अवैध हुक्का बार में छापेमारी कर 17 लोगों को गिरफ्तार किया। इनमें अवैध हुक्का बार का मालिक, दो कर्मचारी और 14 ग्राहक शामिल हैं। मौके पर न तो किसी ने मास्क लगाया हुआ था और न कोई सामाजिक दूरी का पालन कर रहा था। पुलिस अवैध हुक्का बार मालिक सुमित गुप्ता से पूछताछ कर रही है। बाहरी जिले के स्पेशल स्टाफ टीम को बुधवार रात सूचना मिली कि पश्चिम विहार के भेरा एंक्लेव स्थित गुप्ता प्रॉपर्टी के दफ्तर में हुक्का बार चलाया जा रहा है। सूचना मिलते ही एसआई नवीन मलिक, हवलदार प्रदीप, सिपाही अमित, अमित कुमार व अन्य

की टीम ने छापा मारा। इस दौरान वहां भीड़ थी। म्यूजिक के साथ कई नौजवान हुक्का पीने में व्यस्त थे। हुक्का बार का मालिक सुमित गुप्ता वहीं पर मौजूद ?था। पुलिस ने उसके साथ दो कर्मचारियों और 14 ग्राहकों को भी गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ पश्चिम विहार वेस्ट थाने में सरकारी आदेश के उल्लंघन, महामारी अधिनियम, समेत कई अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है।

जब एससी-एसटी केस में सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले पर जताया संदेह

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अपने पूर्व के उन फैसलों पर संदेह जाहिर किया है, जिनमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार रोकथाम) अधिनियम, 1989 की धारा 3 (2) (5) की व्याख्या की गई थी। इस फैसले में कहा गया था कि यह धारा तभी लगाई जा सकती है जब अपराध केवल इस आधार पर किया गया हो कि पीड़ित अनुसूचित जाति या जनजाति का सदस्य था। कोर्ट ने कहा अगर ये फैसले स्वीकार किए जाते हैं तो यह एससी-एसटी के लोगों के प्रति किए जाने वाले अपराधों को कमतर करने जैसा होगा। ये सभी फैसले

दो जजों की पीठों के हैं। जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एमआर शाह की दो सदस्यीय पीठ ने फैसले में कहा कि यह प्रावधान तब तक लागू होता रहेगा जब तक व्यक्ति की जातिगत पहचान अपराध की घटना के आधारों में से एक है। यानी कि यह पता होना कि वह एससी-एसटी सूमह से है। कोर्ट ने कहा कि यदि हम इस आधार पर धारा 3 (2) (5) के संरक्षण से इनकार करते हैं तो यह मानने से इनकार करने जैसा होगा कि किस तरह से सभी सामाजिक असमानताएं एकसाथ जुड़कर एक नतीजा पैदा करती है। यानी कि व्यक्ति का दलित होना, गरीब होना, महिला होना और विकलांग होना- ये सभी कारक आपस में जुड़कर एक ऐसी स्थिति पैदा करते हैं जो सामान्य जाति वाले व्यक्ति को उनके खिलाफ अपराध करने को प्रेरित करता है। पीठ ने हालांकि इस मुद्दे को बड़ी पीठ के पास नहीं भेजा क्योंकि मौजूदा मामले में इस बात के सबूत नहीं थे अपराध इस आधार पर किया गया था कि ऐसा व्यक्ति एससी या एसटी का सदस्य है। कोर्ट ने कहा कि भविष्य में उपयुक्त मामले में इसे बड़ी पीठ को भेजा जाएगा। वहीं, कोर्ट ने यह भी पाया कि अपराध 2011 में हुआ था जबकि एससी-एसटी ऐक्ट में सुधार 2016 में हुआ जिसमें उक्त प्रावधान जोड़ा गया कि अपराध व्यक्ति के एससी एसटी होने के कारण किया गया। इसलिये यह प्रावधान इस मामले में लागू नहीं होगा।

केंद्र ने राज्यों को

कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए जारी किए ये दिशा निर्देश

नई दिल्ली। देश में कोरोना की दूसरी लहर से रोज तीन लाख से ज्यादा केस सामने आ रहे हैं। इसे देखते हुए केंद्र सरकार कोरोना संक्रमण पर रोकथाम के उपायों पर जोर दे रही है। इसी कड़ी में केंद्र सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि वे ज्यादा प्रसार वाले जिलों और इलाकों में गहन रोकथाम के उपायों को लागू करें। साथ ही उन जिलों की पहचान करने को कहा है जहां या तो पिछले एक हफ्ते में पॉजिटिविटी रेट 10 फीसद से ज्यादा थी या जहां अस्पतालों में 60 फीसद से ज्यादा बेड भरे हुए हैं।

हालांकि केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से जारी नए दिशानिर्देशों में लॉकडाउन लगाने के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया है। समाचार एजेंसी पीटीआइ के मुताबिक यह गाइडलाइन मई महीने के लिए जारी की गई है। केंद्र की ओर से जारी गाइडलाइन में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उन जिलों की पहचान करने के लिए कहा गया है जहां कोरोना महामारी की दूसरी लहर से मरीजों की संख्या में भारी उछाल देखा जा रहा है... या जहां पिछले एक हफ्ते में बिस्तर अधिभोग 60 फीसद से अधिक दर्ज किया गया है। केंद्र ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से यह भी कहा है कि जिन जिलों में कोरोना के ज्यादा केस

आ रहे हैं वहां स्थानीय निरूद्ध क्षेत्र बनाने जैसे उपाय किए जाएं ताकि महामारी को फैलने से

● **केंद्र सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि वे ज्यादा प्रसार वाले जिलों और इलाकों में गहन रोकथाम के उपायों को लागू करें।**

रोका जा सके। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्यों से कहा है कि जिन जिलों या इलाकों में कोरोना संक्रमण की दर 10 फीसदी से ज्यादा है या जहां पिछले एक हफ्ते में बिस्तर भरने की दर 60 फीसदी से अधिक है उन जिलों को गहन और स्थानीय निरूद्ध क्षेत्र बनाने के उपायों पर विचार किया जा सकता है। गृह मंत्रालय की ओर से जारी दिशानिर्देश के साथ सामुदायिक निरूद्ध क्षेत्र और बड़े निरूद्ध क्षेत्र जैसे इलाके बनाने की रूपरेखा लागू करने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय की एडवाइजरी को भी संलग्न किया गया है। जारी बयान में कहा गया कि कोविड-19 प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देश पूरे देश में कड़ाई से लागू रहेगा। समाचार एजेंसी पीटीआइ के मुताबिक गृह मंत्रालय की ओर से जारी आदेश 31 मई तक प्रभावी रहेगा। यह आदेश ऐसे वक्त में जारी किया गया है जब एक दिन में कोरोना संक्रमण के सर्वाधिक 3,79,257 नए मामले आए हैं।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संपादकीय

रणनीतिक पेशकश

भारत और चीन के रिश्ते इतने पेचीदा हैं कि उनमें कोई भी एक सीधी लकीर खींचना मुश्किल है। इस वक्त भारत कोविड की लहर की वजह से कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है और दुनिया का ध्यान भारत की ओर है। तमाम देश भारत की मदद करना चाहते हैं, लेकिन विदेशी मदद भले ही वह गंभीर संकट के दौर में क्यों न हो, उसके साथ कई नाजुक कूटनीतिक पेच जुड़े होते हैं। यह बात चीन के सिलसिले में कुछ ज्यादा ही सही है। इस परिप्रेक्ष्य में ही इस खबर को देखा जाना चाहिए कि चीन ने भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ कोविड संकट से निपटने के लिए साझा रणनीति बनाने के उद्देश्य से एक बैठक की। चीन ने भारत को भी इस साझेदारी में शामिल होने का न्योता दिया, जिसे भारत ने ठुकरा दिया। भारत का यह कदम इसलिए स्वाभाविक है कि इस साझेदारी में शामिल होने से भारत का कोई हित सधने वाला नहीं है। जाहिर है, यह बैठक भले ही साझेदारी के नाम पर है, लेकिन इसमें दूसरे देशों की मदद करने की हैसियत में सिर्फ चीन है, यानी वास्तव में यह साझेदारी चीनी मदद इन देशों को देने के तौर-तरीके या शर्तें तय करने के लिए है।

यह भी गौरतलब है कि ये सभी देश सार्क के सदस्य हैं और भारत कोविड केमामले में पहले ही सार्क देशों की साझेदारी की पहल कर चुका है। लेकिन इस वक्त भारत खुद गंभीर संकट में फंसा है, इसलिए दूसरों की खास मदद करने की स्थिति में नहीं है। खासकर कोविड के टीकों के लिए ये सारे देश भारत पर निर्भर थे। ऐसे में, चीन इन देशों की मदद के लिए आगे आया है और उसने अपने यहां से टीके देने की पेशकश की है। यानी एक तरह से यह साझेदारी भारत की जगह चीन को मददगार की तरह स्थापित करने के लिए है। जाहिर है, ऐसी साझेदारी में भारत क्यों कर शामिल होगा। इस तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि भारत ने आपदा में चीन से कई जरूरी सामान आयात करने के लिए मंजूरी दे दी है। यह समझदारी की बात है। हालांकि, यह मानना चाहिए कि दोनों देशों के बीच यह लेन-देन सीमित ही रहेगा। चीन यह चाहता है कि इस आपदा में मदद के रास्ते व्यावसायिक रिश्तों को सीमा विवाद से अलग कर दिया जाए। भारत का नजरिया यही होना चाहिए कि सीमा पर स्थिति असामान्य रहेगी, तो अन्य रिश्ते भी पूरी तरह सामान्य नहीं हो सकते। चीन लगातार यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि भारत का सच्चा मित्र वही है, हालांकि, भारत का यह मानना है कि चीन से मदद नहीं ली जा रही, बल्कि निजी क्षेत्र को जरूरी सामान की आपूर्ति के लिए मंजूरी दी गई है। वैसे भी यह असाधारण संकट है और सोलह साल बाद पहली बार भारत में विदेशों से मदद ली जा रही है। सुनामी के समय भारत को तात्कालिक रूप से मदद की जरूरत पड़ गई थी। कोविड का अभी जो विस्फोट हुआ है, उसने भारत के स्वास्थ्य तंत्र की सीमाएं और कमजोरियां दिखा दी हैं। ऐसे में, हमें ऑक्सीजन, चिकित्सा उपकरण और दवाएं विदेश से मंगवानी पड़ रही हैं। यह तूफान गुजर जाने के बाद यह जरूरी है कि हम अपने सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र को मजबूत करें, ताकि हमें आइंदा ऐसी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़े। तब तक हम पर अपनी फौरी जरूरतों और दीर्घकालीन हितों के बीच संतुलन बनाने की जिम्मेदारी है।

अनिश्चितता में कारोबार

भारत में जारी कोरोना महामारी की बेहद गंभीर दूसरी लहर के बीच एशियाई विकास बैंक (एड़ीबी) ने कहा है कि 31 मार्च, 2022 को समाप्त होने वाले चालू वित्त वर्ष में भारत की अर्थव्यवस्था 11 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। लेकिन साथही आगाह भी किया कि कोविड़-19 संक्रमण के बढ़ते मामलों से आर्थिक सुधार जोखिम में पड़ सकते हैं। कारोबारी गतिविधियां प्रभावित हो सकती हैं। दरअसल, कोरोना की दूसरी लहर ने एक प्रकार की अनिश्चितता पैदा कर दी है। ऐसी स्थिति में कोई भी पूर्वानुमान सटीक साबित होने में दिक्कत होती है। वैसे भी बीते कुछ समय से दुनिया की तमाम अर्थव्यवस्थाओं पर अंदेशों और अनिश्चितताओं के बादल मंड़राते रहे हैं। प्रत्येक देश ने इस दौरान हर मुमकिन कोशिश की अपनी अर्थव्यवस्था को जितना जल्दी हो सके पटरी पर ले आए। लेकिन कोरोना संक्रमण के सामने उनकी पार नहीं बसाई। उन्हें अपने विकास संबंधी पूर्वानुमानों में बीच-बीच में संशोधन तक करने पड़े। कोविड़-19 से मुकाबला करने के लिए इस बीच वैक्सीन आ चुकी हैं। प्रत्येक देश चाहता है कि अपने लोगों को जल्द से जल्द कोरोना संक्रमण के प्रभावों से मुक्त कर ले। लेकिन तमाम देश कोरोना की एक के बाद एक आई लहर से हलकान हुए। भारत को तो अंदाजा तक नहीं था कि दूसरी लहर उसके लिए इस कदर गंभीर होगी। भारत में इन दिनों दूसरी लहर कहर ढा रही है। काफी संख्या में लोगों की जान ले चुकी है। खतरा इतना बढ़ गया है कि लॉकड़ाउन लगाए जाने की जोरों से चर्चा होने लगी है। सरकारें, चाहे केंद्र की हो या राज्यों कीग लॉकड़ाउन लगाने से बचती रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कह चुके हैं कि लॉकड़ाउन को अंतिम विकल्प के रूप में आजमाया जाना चाहिए। लेकिन लगता है कि संक्रमण के बढ़ते कहर से संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए लॉकड़ाउन लगाने के सिवा कोईचारा नहीं बचा है। केंद्र सरकार राज्य सरकारों से सलाह-मशविरे के बाद क्षेत्रबद्ध लॉकड़ाउन लगाने की तैयारी में है। लेकिन कोशिश होगी कि इससे आर्थिक गतिविधियां शिथिल न पड़ने पाएं। सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में ही तालेबंदी करने की चर्चा है। महामारी का संक्रमण थामे नहीं थम रहा। लोगों की जान और कारोबार को बचाने के लिए जरूरी है कि फैलते संक्रमण की चेन को तोड़ा जाए। आने वाले दिनों में हमें इस बाबत प्रयास देखने को मिल सकते हैं।

परिधि/विशाल तिवारी

लाख तरह इंसान चले

अप्रत्याशित हालात में जिम्मेदार लोग आगे बढ़कर नेतृत्व करते हैं। उपाय सुझाते हैं। उदाहरण बनते हैं। प्रेरित करते हैं। कहते हैं न बूंद-बूंद से सागर भरता है। कोरोना की दूसरी लहर में भी कुछ अनुकरणीय शख्यसियतें सामने आई हैं। महाराष्ट्र में 85 साल के एक वरिष्ठ नागरिक ने अपनी जान की परवाह नहीं करते हुए अस्पताल का अपना बिस्तर एक अन्य ज्यादा जरूरतमंद को दे दिया, जिसके बाद इनकी मृत्यु भी हो गई। इस महान बलिदान को देश-समाज सलाम कर रहा है। सवाल यह है कि क्या हम इस बलिदान का एक अंश मात्र भी ग्रहण करने को तैयार हैं? विपदा में जब लोगबाग अपने छोटे-छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर एक दूसरे का सहयोग करने लगते हैं तो उसका प्रभाव सीमित हो जाता है। यह समय की जरूरत भी होती है। क्या व्यक्ति, क्या संस्था सभी अपनी क्षमतानुसार सोशल मीड़िया की सक्रियता से लेकर धरातल तक योगदान दे रहे हैं। लेकिन एक स्याह पक्ष भी है। कुछ निकृष्टों ने इस आपदा में भी अवसर तलाश लिया है। कहीं कोई दवाइयों से लेकर जरूरी वस्तुओं की जमाखोरी कर रहा है, तो कोई इनकी ऊंची कीमतों पर कालबाजारी कर रहा है। वहीं कुछ लोगों का गैर-जिम्मेदाराना रवैया पेश भी क्षोभ पैदा कर रहा है। जैसे कोई कोरोना प्रोटोकॉल की धज्जियां उड़ा रहा है। किसी ने अपने निजी सहायकों का वेतन काट लिया, वो भी तब जब उनका वेतन उनके लिए कोई मायने नहीं रखता पर सहायक के लिए तो जीविका का आधार है। इसके अलावा ड़ाक्टरों के साथ दुर्व्यवहार भी ऐसी ही करतूत है। जान की परवाह किए बगैर सेवारत ड़ाक्टर इससे हतोत्साहित हो रहे हैं। वहीं कुछ अपने गैर-जरूरी खर्चे टालने को तैयार नहीं दिख रहे। शादी जैसे कार्यक्रम भव्य रूप में आयोजित कर रहे हैं। यह राष्ट्रीय आपदा की घड़ी में एक भौंड़ा प्रदर्शन लगता हैं। यहां खर्च होने वाले पैसों से किसी की मदद की जा सकती है। यह सरकारी स्तर पर भी हो सकता हैं। सरकारें भी अपने गैर-जरूरी खर्चों पर लगाम लगा सकती हैं। बचे पैसों का इस्तेमाल जरूरतमंदों के लिए किया जा सकता है। जैसे हालात दिख रहे हैं, उससे यह लड़ाई लंबी खिंचती दिख रही है। तीसरी-चौथी लहर की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। अपने देश की जमीनी हकीकत जानते हुए हम सब को छोटी छोटी पहल करनी चाहिए। हमारा छोटे से स्वार्थ का त्याग महामारी के खिलाफ लड़ाई में समाज का बड़ा हथियार है। क्या हम इसके लिए तैयार हैं?

जांच से टीके तक चुनौतियां

जुगल किशोर, वरिष्ठ जन-स्वास्थ्य विशेषज्ञ

जब संक्रमण तेजी से फैल जाए और उसके भी आंतरिक कारण हों, तब जिस भी व्यक्ति को खांसी, जुकाम और बुखार हो, तो बहुत आशंका है कि उसे कोरोना संक्रमण होगा। ऐसे लक्षण वाले सभी लोगों को आरटीपीसीआर जांच कराने की जरूरत नहीं है। इससे हम जांच पर पड़ रहे अनावश्यक भार को कम कर सकते हैं। कम से कम लोग जांच कराएंगे, तो जरूरी व गंभीर लोगों की जांच में तेजी आएगी। अब यह संख्या दिखाना कदापि आवश्यक नहीं है कि हमारे कितने लोग संक्रमित हो गए, अभी इलाज करने की ज्यादा जरूरत है।

मिसाल के लिए, जब स्वाइन फ्लू आया था, तो उसके खत्म होने का कारण ही यही था कि हमने जांच को बंद कर दिया था, जांच हम उन्हीं की करते थे, जहां जरूरी हो जाता था, तो इससे बीमारी अपने आप कम हुई। स्वाभाविक है, जैसे-जैसे संक्रमण के मामले बढ़ते हैं, वैसे-वैसे लोगों के बीच तनाव भी बढ़ता है। अब यह मानकर चलना चाहिए कि काफी लोग संक्रमित हो गए हैं और अब जो लोग ऐसे लक्षणों के साथ आएंगे, वो कोरोना पीड़ित ही होंगे। लक्षण आते ही घर में ही क्वारंटीन रहते हुए अपना इलाज शुरू कर देना चाहिए। जांच कराने की भागदौड़ी से बचना चाहिए। इस मोर्चे पर भी आईसीएमआर काम कर रहा है कि कोई ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, ताकि जहां आवश्यक हो, वहीं अस्पताल का सहारा लिया जाए। इसके मापदंड तय किए जा रहे हैं, एक अल्गोरिदम बनाने की कोशिश हो रही है, जिसे सिंड्रोमिक अप्रोच भी कहते हैं। यह इसलिए जरूरी है, ताकि केवल लक्षण के आधार पर इलाज हो सके। साथ ही, यह जरूरी नहीं कि हम मरीज को भर्ती करने के लिए आरटीपीसीआर का इंतजार करें। रेपिड टेस्ट की रिपोर्ट आधे घंटे से भी कम समय में मिल जाती है। तत्काल मरीज का इलाज शुरू करें और उसी दौरान आरटीपीसीआर भी कर लें। इधर, आईसीएमआर ने आरटीपीसीआर सहित छह जांचों को मंजूरी दी है। अभी रिपोर्ट आने में देरी हो रही है, लेकिन आरटीपीसीआर जांच की जो साइकिल है, वह चलती है, तो तीन से चार घंटे लगते हैं। आप कितनी भी जल्दी करें, लैब पास में हो, तो भी चार-पांच घंटे तो रिपोर्ट आने में लग ही जाते हैं। हमारे देश में बहुत सारे ऐसे जिले हैं, जहां आरटीपीसीआर सुविधा उपलब्ध नहीं है। सैंपल को दूसरे जिलों में भेजा जाता है, तो उसमें और समय लगता है। इस वजह से देर होती है। हर जगह लैब खोलना भी आसान नहीं होता। लैब की गुणवत्ता जरूरी है, उसे स्थापित करने की एक पूरी प्रक्रिया है। लैब सुविधा अगर बिना गुणवत्ता वाली जगह पर होगी, तो गलत रिपोर्ट आएगी। लैब में अनेक तरह के रसायन होते हैं, उनका रखरखाव भी महत्वपूर्ण होता है। कितने तापमान पर रखना है, कहां रखना है, लैब को पूरे मापदंड पर खरा उतरना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि लैब आप कहीं भी खोल दें और जांच शुरू हो जाए। अच्छी लैब वही है, जो तय मापदंडों को खरी उतरती हो।

पिछले वर्ष जांच की जो स्थिति थी, उसमें काफी सुधार आया है, लेकिन अभी की जरूरत के हिसाब से देखें, तो पर्याप्त नहीं है। जांच की सुविधा को रातों-रात खड़ा नहीं किया जा सकता। इसलिए अभी पूरा जोर ज्यादा से ज्यादा लोगों के इलाज पर होना चाहिए। आपदा प्रबंधन का यही श्रेष्ठ तरीका है। जो जांच व इलाज के संसाधन हैं, उन्हें बहुत ढंग से उपयोग में लाने की जरूरत है, ताकि कम से कम संसाधन में ज्यादा से ज्यादा लोगों को राहत मिले। जांच और इलाज के साथ ही, टीकाकरण भी तेज करने की जरूरत है। एक मई से 18 साल से ज्यादा उम्र के लोगों को भी टीका लगने की शुरुआत हो जाएगी। कुछ राज्यों ने टीके की किल्लत पहले ही बता दी है। केंद्र सरकार ने टीका संग्रहण में जो कामयाबी हासिल की थी, उससे थोड़ी मदद मिल पाएगी, लेकिन केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों से कहा है कि वे अपने स्तर पर ही मान्यताप्राप्त वैक्सीन जुटाने के प्रयास करें। यह तरीका ठीक है, लेकिन दिक्कत क्रियान्वयन में है। वैक्सीन को लगाने में है। अव्वल, तो जब हम किसी भीड़ भरी जगह पर जाते हैं, तो वहां संक्रमण का खतरा ज्यादा होता है। यह बात हो रही है कि लोग जब टीका लेने अस्पताल जाते हैं और वहां भीड़ रहती है, तो वे खुद को खतरे में डालते हैं। ऐसे में, बहुत जरूरी है कि टीका केंद्रों का हम विकेंद्रीकरण करें। अब टीका केंद्रों को अस्पतालों से अलग करने की भी मांग हो रही है। अभी तक टीकाकरण का कोई ऐसा खतरा सामने नहीं आया है कि टीका लेने के बाद अस्पताल की जरूरत पड़े। टीका केंद्रों को अस्पताल से कुछ दूर रखा जा सकता है। एक बात यह भी ध्यान रखने की है कि अस्पताल में काम करने वाले जो स्वास्थ्यकर्मी हैं, उन्हें टीकाकरण केंद्रों पर बड़े पैमाने पर नहीं भेजा जा सकता। स्वास्थ्यकर्मियों की वैसे ही कमी है, अगर उन्हें अस्पतालों से बाहर तैनात कर दिया जाए, तो अस्पतालों में मरीजों का इलाज मुश्किल हो जाएगा। ऐसे मेडिकल स्टाफ को टीकाकरण में लगाना होगा, जो छोटे या ऐसे केंद्रों पर पदस्थ हैं, जहां मरीजों को भर्ती नहीं किया गया है। अस्पतालों पर दबाव बढ़ाना ठीक नहीं है, उनके दबाव को साझा करने की जरूरत है। बेशक, एक मई से टीका लेने वालों की भीड़ उमड़ सकती है, तो टीका केंद्रों के विकेंद्रीकरण से भीड़ को रोका जा सकता है।

> “हमें यह देखना होगा कि एक तरह की आबादी में अलग-अलग तरह के टीके का उपयोग उतना अच्छा नहीं होगा। एक तरह का टीका हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को लगाएं, तो बेहतर है।”

टीके के अभाव को दूर करने के लिए भी सरकार ने प्रयास तेज किए हैं। विदेश से वैक्सीन का आयात होना है, साथ ही, देश में उत्पादन बढ़ाने की कोशिशें जारी हैं। कच्चा माल मिलते ही स्वदेशी कंपनियां ज्यादा से ज्यादा टीके बनाने की क्षमता रखती हैं। हमें यह देखना होगा कि एक तरह की आबादी में अलग-अलग तरह के टीके का उपयोग उतना अच्छा नहीं होगा। एक तरह का टीका हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को लगाएं, तो बेहतर है। राज्यों को टीकों की संख्या को लेकर विचलित नहीं होना चाहिए। टीकों की उपलब्धता के हिसाब से ही अभियान चलाने की जरूरत है। राज्यों को अपने उपलब्ध संसाधनों और स्वास्थ्यकर्मियों की सीमित संख्या को देखते हुए अपनी योजना बनानी पड़ेगी। एक और बात आज महत्व की है। अगर किसी को शक है कि उसे संक्रमण हो चुका है, तो वह तत्काल टीका न ले। डॉक्टर भी यही सलाह दे रहे हैं कि कोरोना संक्रमित हुए लोगों को कम से कम तीन महीने तक टीका नहीं लेना चाहिए और पूरी सावधानी से रहना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

चर्चित चेहरा

जीवन में अच्छाई की तलाश का नजरिया

अरुण नैथानी

चीनी मूल की चर्चित निर्देशक क्लाई झाओ के लिये इस बार का 93वां ऑस्कर पुरस्कार समारोह कुल मिलाकर झोली भरने वाला ही साबित हुआ। उनकी चर्चित फिल्म नोमैडलैंड के हिस्से तीन बड़े विश्व प्रतिष्ठित पुरस्कार आये हैं। जिसमें बेस्ट फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर और बेस्ट एक्ट्रेस का पुरस्कार भी शामिल है। सही मायनो में यह सम्मान पाना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पहली बार किसी एशियाई मूल की अश्वेत फिल्म निर्देशक को यह बेस्ट डायरेक्टर का सम्मान मिला है। ऑस्कर फिल्म पुरस्कारों के अब तक के 93 साल के इतिहास में यह सम्मान हासिल करने वाली वह दूसरी महिला हैं। इससे पहले कैथरीन बिगेलो पहली महिला निर्देशक थी, जिन्हें वर्ष 2009 में अपनी फिल्म ‘द हर्ट लॉकर’ के लिये ऑस्कर पुरस्कार मिला था। इसी फिल्म नोमैडलैंड के लिये अभिनेत्री फ्रांसिस मैक्डॉरमैंड को बेस्ट एक्ट्रेस का पुरस्कार प्रदान किया गया। वह फिल्म निर्माण में साझीदार भी थीं। दरअसल, विश्वव्यापी कोरोना महामारी के बीच आयोजित यह पुरस्कार समारोह सुरक्षा की दृष्टि से लॉस एंजेलिस में दो जगह आयोजित किया गया। आयोजकों ने फैसला किया था कि यह कार्यक्रम वर्चुअल तरीके से नहीं कराया जायेगा। उनका सोचना था कि कोरोना संकट की जकड़ से धीरे-धीरे मुक्त हो रहे जनमानस के जीवन में कुछ रंग भरे जायें। यह आयोजन लॉस एंजेलिस में एक तो डॉल्बी थियेटर में और दूसरा यूनियन स्टेशन में आयोजित किया गया। जबकि दो दशक से यह आयोजन सिर्फ डॉल्बी थियेटर में ही आयोजित किया जाता रहा है। वहीं सुरक्षा की दृष्टि से ब्रिटेन के कलाकारों के लिये लंदन में एक स्थान तथा पेरिस में एक हब बनाया गया था।

दरअसल, चीनी मूल की क्लाई झाओ किशोरावस्था में अमेरिका आ गई थी। उन्होंने नई परिस्थितियों में खुद को ढाला और सोचना शुरू किया कि कैसे नये परिवेश की मुश्किलों का सामना किया जाये। एक संवदेनशील व्यक्तित्व के तौर पर वह सृजन के सरोकारों से जुड़ी। उन्होंने फिल्म बनाने की राह चुनी। दरअसल, नोमैडलैंड क्लाई झाओ की तीसरी फिल्म है जो जेसिका बर्डर की इसी नाम की रची गई साहित्यिक रचना पर आधारित है। इस फिल्म की नायिका फ्रांसिस मैकडॉरमैंड ने रचना के पात्र फर्न का किरदार निभाया है। फिल्म अमेरिका में स्थित नेवादा के ग्रामीण इलाके में रहने वाली एक ऐसी महिला की कहानी है, जिसकी कंपनी संकटों में फंस जाती है। कालांतर इससे उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। इस संकट की घड़ी में वह ऐसा जीवन जीती है जो आधुनिक खानाबदोश जैसा है। वह अपनी कार उठाकर समाज से बाहर नये सिरे से यायावरी जीवन जीना आरंभ करती है। लेकिन इन तमाम संघर्षों के बीच वह सकारात्मक नजरिया नहीं छोड़ती। तमाम संकटों के बावजूद वह जीवन के उज्ज्वल पक्ष की पक्षधर रही है।

क्लाई झाओ ने वर्ष 2015 में फिल्म-‘सॉन्गस माई ब्रदर्स टॉट मी’ के निर्देशन से अपने फिल्मी कैरियर की शुरुआत की। इसके बाद आई उनकी दूसरी फिल्म ‘राइडर’ ने फिल्म जगत में उन्हें वैश्विक पहचान दिलायी। अब उनकी तीसरी फिल्म नोमैडलैंड ने कामयाबी के झंडे गाड़ दिये। कई बड़े निर्देशकों की फिल्में प्रतियोगिता में शामिल थीं लेकिन झाओ के हिस्से कामयाबी आई। इस फिल्म के अन्य चर्चित कलाकारों में डेविड स्ट्रैथेर्न और लिंडा भी शामिल रहे। नोमैडलैंड ऑस्कर पुरस्कारों में कामयाबी की नई इबारत लिखेगी, ऐसे कयास पहले से ही लगाये जा रहे थे। इसकी वजह यह थी कि क्लाई झाओ की यह फिल्म गोल्डन ग्लोब्स, क्रिटिक्स च्वाइस अवार्ड्स, बाफ्टा अवार्ड्स, इंडीपेंडेंट स्प्रिट अवार्ड्स जैसे पुरस्कार पहले ही जीत चुकी थी। वैसे इस साल बेस्ट फिल्मों की दौड़ में कई चर्चित फिल्में भी शामिल थीं, जिनमें द फादर, जुडाज एंड ब्लैक मेसीहा, मैंक, मिनारी, नोमैडलैंड, प्रॉमिसिंग यंग वुमन, साउंड ऑफ मेटल और द ट्रायल ऑफ शिकागो को नामांकन मिला था।

क्लाई झाओ को चीनी साम्यवादी व्यवस्था में हमेशा से ही घुटन महसूस होती रही है। शायद वह इसीलिये चीन छोड़कर अपने परिवार के साथ अमेरिका चली गई। वर्ष 2013 में क्लाई झाओ ने एक साक्षात्कार में चीन की राजनीतिक व्यवस्था की तीखी आलोचना की थी। जिसमें उसने चीनी व्यवस्था में झूठ के वर्चस्व की बात कही थी। जिस पर चीनी राष्ट्रवादी संस्थाओं ने उनका बहिष्कार आरंभ कर दिया था। यही वजह है कि अब उनकी फिल्म नोमैडलैंड को चीन में रिलीज नहीं किया गया।

93वें ऑस्कर पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार जीतने वाली क्लाई झाओ ने सम्मान स्वीकार करते हुए कहा कि मैं जीवन में सदैव अच्छाइयों को देखती हूं। इस दुनिया में मैं जिससे भी मिली हूं, उनमें मैंने अच्छाइयां ही पायी हैं। यह पुरस्कार उन्हीं लोगों को समर्पित है जो जीवन की अच्छाई में विश्वास करते हैं। साथ ही जिनमें अच्छे बने रहने का साहस है, भले ही जीवन कितने ही संकटों से गुजर रहा हो। ऐसे लोग मुझे प्रेरणा देते हैं।

स्वस्थ भारत

वाकई में है बड़ी चुनौती

रविशंकर

कोरोना वायरस की दूसरी लहर से देश की स्वास्थ्य व्यवस्था वेंटिलेटर पर आ गई है। कई राज्यों में अस्पताल में बिस्तरों की कमी, ऑक्सीजन सिलेंडर की कमी व रेमडेसिविर की किल्लत की खबरें आ रही हैं। इस कारण मरीज बेहाल हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि क्या हम आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। फिलहाल अब सभी की नजरें देश के जन स्वास्थ्य सुरक्षा सिस्टम पर टिक गई हैं। अस्पतालों में बिस्तर और वेंटिलेटर तेजी से कम पड़ने लगे हैं, जबकि वर्तमान समय में कोरोना एक वैश्विक महामारी बन चुकी है। ऐसे में अहम सवाल है कि हमारे यहां स्वास्थ्य सेवाओं का जो इंफ्रास्ट्रक्चर है, क्या हम उससे इस महामारी से जंग लड़ पाएंगे? भले ही सरकार ने कोरोना से लड़ने के लिए अस्पताल तैयार किए हैं और सरकार हर रोज इस पर मॉनिटिरंग कर रही है। फिर भी, गुणवत्ता और मूल्य के आधार पर देखा जाए तो भारत में स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर निरंतर कमजोर बना हुआ है। यही वजह है कि आज स्वस्थ भारत का निर्माण चुनौती बन गई है।

यह वक्त जरा ठहर कर सोचने का है कि क्या कोविड-19 से निबटने की रणनीति को लेकर पिछले एक साल में हेल्थ सेक्टर के क्षेत्र में जो नींव रखी गई है, वह कारगर है। अगर यह वायरस दुनिया की कुछ बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाओं से लैस देशों के छक्के छुड़ा सकता है, तो भारतीय स्वास्थ्य व्यवस्था के दीन-हीन बुनियादी ढांचे से तो कोई उम्मीद ही बेकार है। पूरी दुनिया कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ रही है, जिसने मनुष्यों को अपने धीरज, विवेक और विज्ञान की सीमाओं का परीक्षण करने के लिए मजबूर कर दिया है। जबकि कोरोना महामारी ने हमें सिखाया है कि कैसे स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या आतथक और सामाजिक समस्या का रूप ले सकती है। हेल्थकेयर इंस्ट्रक्चर ऐसा होना चाहिए, जो महामारी की स्थिति में लड़खड़ाए नहीं। लेकिन कोरोना की दूसरी लहर आने पर पता चला कि देश का हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर किस स्थिति में है। इसने महामारी को फैलने से रोकने और उससे निपटने में स्वास्थ्यकतमयों की अहमियत उजागर कर दी। ऐसा लग रहा है कि पूरा का पूरा मेडिकल सिस्टम ही ध्वस्त हो गया है। सवाल है कि डिजिटलाइजेशन का दंभ भरने वाली सरकारें आखिर क्यों ऐसी व्यवस्था नहीं बनातीं जहां पूरी पारदतशता के साथ बताया जाए कि किस अस्पताल में कितने बेड खाली हैं? किस जगह पर कौन सी दवा उपलब्ध है? सरकार के पास कितना स्टॉक है, और यह कैसे लिया जा सकता है?

इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वास्थ्य शायद भारत के राजनीतिक एजेंडे के प्राथमिक बिंदुओं में कभी नहीं रहा। जाने-माने अर्थशास्त्री प्रो. अमर्त्य सेन भी लगातार जोर देते रहे हैं कि भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए किसी एकीकृत एक्शन प्लान की सख्त आवश्यकता है। उनका मानना है कि आतथक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक प्रगति भी उतनी ही आवश्यक है। यदि हम चीन और भारत के आतथक विकास की तुलना करें, तो चीन के आतथक विकास का बहुत बड़ा कारण उसका स्वास्थ्य एवं शिक्षा में निवेश करना रहा है। भारत को भी अपने नागरिकों को विश्व की स्पर्धा में आगे लाने के लिए उन्हें स्वास्थ्य-उपहार देना होगा।

वर्तमान हालात को देखते हुए यह बात अब साफ हो चुकी है कि कोविड-19 इतनी जल्दी जाने वाला नहीं। खैरग अपने देश की आबादी की स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ हमें महझवपूर्ण मेडिकल उपकरणों जैसे कि टेस्टिंग किट, निजी सुरक्षा उपकरण, मास्क और गाउन का सामरिक भंडार भी तैयार करना चाहिए। इसके अलावा जीवन रक्षक उपकरण जैसे कि वेंटिलेटर और सीपीएपी को भी बुरे वक्त के लिए जुटा कर रखा जाना चाहिए। महामारी की तैयारी हमारी नीतियों और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने की परिचर्चा का हिस्सा बननी चाहिए। हमें पूरे देश में स्वास्थ्य उपकरणों के निर्माण को तेज करना चाहिए ताकि हमारी नई खोजों को जल्द से जल्द बाजार में लाया जा सके। आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए हमें रणनीतिक रूप से योजना बनानी चाहिए। इसके लिए आवश्यक उचित फंड़ की व्यवस्था करनी चाहिए। तभी हम अपनी जरूरतें पूरी कर पाने लायक बन सकेंगे।

बहरहाल, दुनिया की बड़ी आतथक ताकत बनने जा रहे भारत में हेल्थ सेक्टर की बुनियाद ही कमजोर है, और कोविड-19 भी हमारे सामने है। ऐसे समय में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की जरूरत है ताकि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। सरकार को ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं तक सबकी आसान पहुंच हो और कम खर्च में इलाज हो सके।

ब्लू ओरिजिन ने स्पेस टूरिज्म रॉकेट पर सीट के लिए टिकट बुकिंग का टीजर रिलीज किया

वॉशिंटन। अमेजॅन और एयरोस्पेस कंपनी ब्लू ओरिजिन के संस्थापक जेफ बेजोस ने अपने अंतरिक्ष पर्यटन रॉकेट, न्यू शेपर्ड पर पहली सीटों के लिए टिकट काटते हुए एक वीडियो ट्वीट किया। वीडियो में 14 अप्रैल को ब्लू ओरिजिन की 15 वीं न्यू शेपर्ड परीक्षण उड़ान के ठीक बाद टेक्सास रेगिस्तान के माध्यम से काउबॉय टोपी पहने और इलेक्ट्रिक रिवियन ट्रक चलाते हुए बेजोस को दिखाया गया है। ठीक है यहाँ हम चलते हैं ट्रक चलाते हुए बेजोस ने कहा। दोस्तों, यह कितना रोमांचक है, सी मेन उन्होंने कहा, क्योंकि वह पैराशूट के नीचे क्रू कैप्सूल का निरीक्षण करने के लिए ट्रक से बाहर निकला था। अंतरिक्ष कंपनी ने गुरुवार को एक ट्वीट में वीडियो के साथ साझा किया, आप न्यूशेपयार्ड पर बहुत पहले सीट खरीद सकते हैं। ब्लू ऑरिजन डॉट कॉम पर डिटेल्स देखें। 14 अप्रैल को, ब्लू ओरिजिन ने कंपनी के पुन प्रयोज्य सबऑर्बिटल रॉकेट न्यू शेपर्ड की 15 वीं अनकैप्ड परीक्षण उड़ान के दौरान एस्ट्रोनॉट रिहर्सल किया, जिसे एनएस 15 करार दिया गया। न्यू शेपर्ड की आखिरी बिना परीक्षण वाली उड़ान अंतरिक्ष यात्रियों के लिए उड़ान भरने से पहले वाहन और संचालन के लिए एक सत्यापन कदम था ब्लू ओरिजिन ने उस समय कहा, सूक्ष्म संकेत छोड़ते हुए कि इसकी अगली उड़ान में अंतरिक्ष यात्री शामिल हो सकते हैं।

एसराइड ने कम्युनिटीज की मदद करने के लिये एसनेबर फीचर लॉन्च किया

मुम्बई। कम्युनिटीज बनाने के लिये समान सोच वाले लोगों का एक प्लेटफॉर्म बनाने के लक्ष्य से शुरू भारत की सबसे बड़ी कारपूलिंग एप एसराइड ने शुक्रवार को एसनेबर के लॉन्च की घोषणा की है। यह अनूठी लोकेशन-बेस्ड डिस्कवरी एप इस कठिन समय में पड़ोसियों को मदद लेने और जरूरतमंदों को सहयोग देने में सक्षम बनाती है। कई परिवार पीड़ित हैं और उन्हें भोजना, किराना, दवा और जीवन बचाने वाले उपकरणों के रूप में मदद चाहिये। एसनेबर्स पके हुए भोजन, किराना, दवाओं से एक-दूसरे की मदद करेंगे और दवा, ऑक्सीजन टैंक, हॉस्पिटल बेड, टीके वाले टीका केन्द्रों पर जानकारी साझा करेंगे और टीका केन्द्रों तक पहुंचने, आदि की पेशकश करेंगे। जरूरतमंद लोग केवल एक बटन को क्लिक कर सहयोग देने वाले लोगों और पड़ोसियों के संपर्क में आ सकेंगे। कोरोनावायरस की दूसरी लहर ने एक बार फिर देश को ठप कर दिया है और स्वास्थ्य अवसंरचना पर भारी बोझ डाल दिया है। अस्पतालों में बेड्स की कमी और ऑक्सीजन आपूर्ति के अभाव पर होने वाली चर्चाओं ने लोगों को सहयोग के लिये हड़बड़ी में दौड़ने पर मजबूर कर दिया है। कई क्षेत्रों में कठोर लॉकडाउन के कारण किराना, दवा और अस्पतालों तक परिवहन जैसी जरूरतें भी प्रभावित लोगों के लिये समस्या बन गई हैं। एंड्रॉइड प्ले स्टोर पर लॉन्च होने के बाद मिनटों में ही एसनेबर फीचर को 100 से ज्यादा रजिस्ट्रेशंस मिल चुके हैं, जिनमें से 50 प्रतिशत लोगों ने पोस्ट किया है कि वे दवा, पका हुआ भोजन, किराना और टीका केन्द्रों तक परिवहन द्वारा मदद कर सकते हैं। इस काम में वैश्विक सॉफ्टवेयर कंपनियों ईपीएएम और थॉटवर्क्स ने शामिल होकर अपने कर्मचारियों को जरूरत के मुताबिक मदद देने और लेने के लिये इस प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करने के लिये प्रोत्साहित किया है। इस लॉन्च पर एसराइड की को-फाउंडर लक्षणा झा ने कहा, कोविड-19 के कारण तेजी से बदल रही परिस्थितियों में यह देखना सुखद है कि लोग और समुदाय एकजुट हो रहे हैं, ताकि एक-दूसरे की मदद कर सकें। एसनेबर के लिये हमने अपने मौजूदा टेक्नोलॉजी इंफ्रास्ट्रक्चर और 2 मिलियन से ज्यादा यूजर्स के नेटवर्क को इस तरह जोड़ा है कि उसका जमीनी स्तर पर सकारात्मक प्रभाव हो सकता है। हमारी मंशा एकजुट होने और कम्युनिटीज बनाने के लिये लोगों को प्लेटफॉर्म देने की है, जहां वे एक-दूसरे से जुड़कर मदद और सहयोग साझा कर सकें। हमारा पक्का मानना है कि सामाजिक प्राणी होने के नाते सभी मानवों को सर्वाइव करने के लिये एक-दूसरे की जरूरत है। और हमें उम्मीद है कि यह प्लेटफॉर्म इस कठिन समय से उभरने में यूजर्स की मदद कर उस उद्देश्य का पूरक बनेगा।

गूगल के लिए वरदान बना work from Home, एक साल में बचाए इतने पैसे...जानकर रह जाएंगे हैरान

बिजनेस डेस्क।

कोरोना संकट के दौरान देश-दुनिया की अधिकतर कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को वर्क फ्राम होम (2श्ह्म्ह्य द्धह्म्श्व ॥श्वद्व) दिया था। कई कंपनियों के कर्मचारी अभी भी घर से काम कर रहे हैं। दुनिया की टॉप कंपनी गूगल के भी सभी कर्मचारी घर से ही काम कर रहे हैं। गूगल हमेशा ही अपने कर्मचारियों का खास ध्यान रखती आई है और उनपर दिल खोलकर खर्च भी करती है। वहीं गूगल के लिए कर्मचारियों को वर्क फ्राम देना वरदान साबित हुआ है। गूगल ने वर्क फ्राम होम से काफी बचत की है। दरअसल कर्मचारियों के घर से काम करने के कारण गूगल को उनपर ट्रेवल, होटल बुकिंग और अन्य सुविधाओं पर बहुत कम खर्च करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं गूगल ने कोरोना महामारी में फिजिकल प्रमोशन का भी खर्चा बचाया।

पहली तिमाही के दौरान गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट ने पिछले साल की समान अवधि की तुलना में कंपनी के प्रमोशन, ट्रैवल और एंटरटेनमेंट के खर्चों में 268 मिलियन (लगभग 1,980 करोड़ रुपए) की बचत की है सालाना तौर पर, यह .1 बिलियन (लगभग 7,400 करोड़ रुपए) से अधिक होगा। अल्फाबेट ने इस साल की शुरुआत में अपनी एनुअल रिपोर्ट में कहा था कि साल 2020 में एडवरटाइजिंग और प्रमोशनल खर्चों में .1.4 बिलियन (लगभग 10,360 करोड़ रुपए) की कमी आई है क्योंकि कंपनी ने महामारी के दौरान खर्चों को घटाया, रोका या कैंपेन को रीशेड्यूल और कुछ इवेंट्स को केवल डिजिटल फॉर्मेट में बदल दिया।

ऐसे में ट्रैवल और एंटरटेनमेंट खर्च .371 मिलियन (लगभग 2,740 करोड़ रुपए) कम हो गया। कंपनी ने कोरोना के चलते खर्चों को कम किया, कैंपेन को रीशेड्यूल किया और कई इवेंट को डिजिटल माध्यम से पेश किया. ऐसा करने से कंपनी के ट्रैवल और एंटरटेनमेंट में होने वाले खर्च में .371 मिलियन (लगभग 2,740 करोड़ रुपए) की कमी आई।

कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में फोर्ड मोटर 50 लाख सर्जिकल मास्क और एक लाख एन95 मास्क दान देगी

नेशनल डेस्क:

अमेरिका की वाहन विनिर्माता कंपनी फोर्ड मोटर ने शुक्रवार को कहा है कि वह भारत में कोरोना वायरस के खिलाफ जारी लड़ाई में मदद के लिये 50 लाख सर्जिकल मास्क, एक लाख एन95 मास्क और 50 हजार कोरोना किट दान में देगी। कंपनी ने आगे कहा है कि फोर्ड फंड दो लाख डालर (करीब डेढ करोड़ रुपये) का अनुदान भारत और ब्राजील में कोविड- 19 में आवश्यक राहत सामग्री उपलब्ध कराने वाले संगठनों को देगी। फोर्ड कंपनी ने ट्वीट कर यह जानकारी दी है। भारत इन दिनों कोरोना वायरस की गंभीर दूसरी लहर से जूझ रहा है। इसके संक्रमण की रफ्तार काफी तेज है और पिछले 24 घंटे के दौरान देशभर में 3,86,452 नये मामले सामने आये हैं। इन्हें मिलाकर कोरोना संक्रमण के मामलों की कुल संख्या एक करोड 87 लाख 62 हजार 976 तक पहुंच गई है। वहीं इस समय सक्रिय मामलों की संख्या 31 लाख के पार निकल गई है।

एप्पल ने 42 प्रतिशत शेयर हासिल किए, जबकि सैमसंग दुनिया भर में सबसे बड़ा स्मार्टफोन ओईएम है

नई दिल्ली।

एक नई रिपोर्ट के अनुसार, अपनी आईफोन 12 श्रृंखला की सफलता के आधार पर, एप्पल ने वैश्विक स्मार्टफोन बाजार में 42 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी (मूल्य के आधार पर) पर कब्जा कर लिया, जिसने इस साल पहली तिमाही (जनवरी मार्च) में पहली बार बिक्री में रिकॉर्ड 113 बिलियन डॉलर की बिक्री की। काउंटरपॉइंट रिसर्च के अनुसार, सैमसंग ने दुनिया के सबसे बड़े मूल उपकरण निमार्ता या ओइएम (वॉल्यूम द्वारा) के रूप में क्यू 1 2021 में 76.8 मिलियन यूनिट तक पहुंचने वाले शिपमेंट के साथ अपना शीर्ष स्थान हासिल किया। ओप्पो, विवो, श्याओमी और ऐप्पल की अगुवाई में ग्लोबल शिपमेंट 20 फीसदी से बढ़कर 354 मिलियन यूनिट तक पहुंच गया है। वरिष्ठ विश्लेषक, हरमीत सिंह वालिया ने कहा कि एप्पल ने आईफोन 12 सीरीज के मजबूत प्रदर्शन और विलंबित लॉन्च की वजह से पिछली तिमाही से मांग ओवर ओवर से प्रेरित एक रिकॉर्ड पहली तिमाही के राजस्व शेयर पर कब्जा कर लिया। अमेरिका और यूरोप ने भी एप्पल के राजस्व में वृद्धि को बढ़ावा दिया। ओप्पो के पास राजस्व और शिपमेंट दोनों के मामले में रिकॉर्ड तिमाही थी। ओप्पो ने 38 मिलियन यूनिट्स को वैश्विक स्तर पर भेज दिया, जो कि 70 प्रतिशत से भी अधिक है। रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि चीन में विकास के कारण क्यू1 2021 में विवो के शिपमेंट में 64 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो अब तक की सबसे अधिक 35.5 मिलियन यूनिट है।

शेयर बाजारों में चार दिन की तेजी पर लगा विराम, सेंसेक्स 984 अंक लुढ़का

मुंबई,

शेयर बाजारों में पिछले चार दिनों से जारी तेजी पर शुक्रवार को विराम लग गया और बीएसई सेंसेक्स 984 अंक की भारी गिरावट के साथ बंद हुआ। देश में कोविड-19 संक्रमितों की संख्या दिन-ब-दिन तेजी से बढ़ने और एशियाई बाजारों में गिरावट का असर घरेलू बाजार पर पड़ा। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सूचकांक 983.58 अंक यानी 1.98 प्रतिशत का गोता लगाकर 48,782.36 अंक पर बंद हुआ। इसी प्रकार, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 263.80 अंक यानी 1.77 प्रतिशत टूटकर 14,631.10 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में सर्वाधिक नुकसान एचडीएफसी बैंक और एचडीएफसी लि. को हुआ। इनमें 4 .38 प्रतिशत की गिरावट आयी। इसके अलावा, आईसीआईसीआई बैंक, कोटक बैंक, एशियन पेंट्स, महिंद्रा एंड महिंद्रा, टीसीएस और मारुति आदि शेयरों में गिरावट दर्ज की गयी। दूसरी तरफ, सेंसेक्स में शामिल केवल चार शेयर... ओएनजीसी, सन फार्मा, डॉ. रेड्डीज और बजाज ऑटो लाभ में रहे। इनमें 4.32 प्रतिशत तक की तेजी आयी। हालांकि साप्ताहिक आधार पर सेंसेक्स 903.91 अंक यानी 1.88 प्रतिशत मजबूत हुआ जबकि एनएसई निफ्टी 289.75 यानी 2.02 प्रतिशत ऊपर चढ़ा। रिलायंस सिक्योरिटीज के रणनीति प्रमुख विनोद मोदी ने कहा, ''वैश्विक बाजार में कमजोर रुख के बीच वित्तीय कंपनियों के शेयरों में बिकवाली से घरेलू शेयर बाजार टूटा। चीन में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि अप्रैल में उम्मीद से कम रहने के कारण वृद्धि को लेकर चिंता से एशियाई बाजारों में गिरावट आयी।'' उन्होंने कहा, ''रोजाना कोविड संक्रमण के बढ़ते मामले और अधिक संख्या में लोगों की मौत केंद्र एवं राज्य सरकारों के लिये चिंता का कारण बना हुआ है। ऐसे में आगे राज्य सरकारों द्वारा और आर्थिक पाबंदियों से इनकार नहीं किया जा सकता। कोविड-19 संक्रमण के मामले जबतक कम नहीं होते हैं, बाजार में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है।'' स्वास्थ्य मंत्रालय के शुक्रवार को जारी आंकड़े के अनुसार देश में पिछले 24 घंटे में कोविड-19 के 3,86,452 नए मामले आने से संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 1,87,62,976 हो गयी है, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या 31 लाख को पार कर गयी है। सुबह आठ बजे अद्यतन किए गए आंकड़ों के मुताबिक संक्रमण से 3,498 और मरीजों की मौत हो गयी जिससे कोविड संक्रमण से अब तक 2,08,330 लोग दम तोड़ चुके हैं। वैश्विक स्तर पर अमेरिका में टीकाकरण में तेजी के साथ आर्थिक गतिविधियां बढ़ने से पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 6.4 प्रतिशत रही। हालांकि चीन में विनिर्माण और सेवा दोनों क्षेत्रों में वृद्धि कमजोर रही। इससे पता चलता है कि चीन के समक्ष पुनरूद्धार को लेकर चुनौती अभी बनी हुई है। एशिया के अन्य बाजारों में शंघाई, हांगकांग, सोल और तोक्यो में गिरावट रही। यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरूआती कारोबार में मामूली तेजी दिखी। हालांकि आंकड़े के अनुसार यूरो क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पहली तिमाही में 0.6 प्रतिशत की गिरावट आयी है और क्षेत्र मंदी में चला गया है। इस बीच, अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1.31 प्रतिशत की गिरावट के साथ 67.15 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 2 पैसे की मामूली गिरावट के साथ 74.09 पर बंद हुआ। शेयर बाजार में उपलब्ध आंकड़े के अनुसार विदेशी संस्थागत निवेशक पूंजी बाजार में शुद्ध लिवाल रहे और उन्होंने बृहस्पतिवार को 809.37 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे।

कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच रेमडेसिविर की 4.5 लाख खुराक आयात करेगी सरकार

नयी दिल्ली,

देश में कोरोना वायरस महामारी की दूसरी लहर के कहर के बीच सरकार ने वायरस रोधी दवा रेमडेसिविर की 4.5 लाख खुराक मंगाने के लिये आर्डर दिया है जिसमें से 75,000 शीशियों की पहली खेप शुक्रवार को भारत पहुंच जाने की उम्मीद है। उर्वरक एवं रसायन मंत्रालय ने एक वक्तव्य में यह जानकारी दी है। मंत्रालय ने कहा है कि देश में इस दवा की कमी को दूर करने के लिये सरकार ने रेमडेसिविर का आयात करना शुरू किया है। इसकी 75,000 शीशियों की पहली खेप शुक्रवार को भारत पहुंच जायेगी। देश में कोरोना वायरस संक्रमण के मामले तेजी से बढ़ने के साथ रेमडेसिविर की मांग कई गुणा बढ़ गई है। वायरस रोधी इस दवा का इस्तेमाल कोविड- 19 संक्रमण के इलाज में किया जाता है। मंत्रालय की विज्ञप्ति में कहा गया है कि सरकारी कंपनी एचएलएल लाईफकेयर लिमिटेड ने साढे चार लाख रेमडेसिविर की खुराक के लिये अमेरिका की कंपनी मैसर्स गिलीड साइंसिज इंक और मिस्र की दवा कंपनी मैसर्स इवा फार्मा को आर्डर दिया है। इसमें कहा गया है कि यह माना जा रहा है कि गिलीड साइंसिज अगले एक से दो दिन के भीतर 75,000 से लेकर एक लाख खुराक भारत भेज देगी। इसके बाद 15 मई अथवा उससे पहले एक लाख और दवा की शीशियां भारत पहुंच जायेंगी। विज्ञप्ति में कहा गया है

कि वहीं इवा फर्मा शुरुआत में दस हजार खुराक भेजेगी और उसके बाद प्रत्येक 15 दिन में जुलाई तक 50 हजार शीशियां भेजती रहेगी। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय ने कहा है कि उसने भी देश में रेमडेसिविर की उत्पादन क्षमता को बढ़ाया है। उसने कहा कि 27 अप्रैल की स्थिति के अनुसार देश में लाइसेंस प्राप्त सात घरेलू विनिर्माताओं की उत्पादन क्षमता 38 लाख शीशी प्रति माह से बढ़कर 1.03 करोड़ शीशी प्रति माह तक पहुंच गई है। दवा कंपनियों ने पिछले सात दिन के भीतर 13.73 लाख शीशियों की देशभर में आपूर्ति की है। रेमडेसिविर की दैनिक आपूर्ति जो कि 11 अप्रैल को 67,900 खुराक थी वह 28 अप्रैल को बढ़कर 2.09 लाख खुराक तक पहुंच गई। देश में कोरोना वायरस के दैनिक संक्रमण के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। शुक्रवार को पिछले 24 घंटे के दौरान कोरोना संक्रमण के 3,86,452 नये मामले सामने आये हैं। इनमें मिलाकर संक्रमित हो चुके लोगों का कुल आंकड़ा 1,87,62,976 तक पहुंच गया। वहीं सक्रिम मामलों की संख्या 31 लाख के पार चली गई है।

आठ बुनियादी उद्योगों के उत्पादन में मार्च में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि

नयी दिल्ली,

देश में आठ बुनियादी उद्योगों के उत्पादन में इस साल मार्च में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। तुलनात्मक आधार कमजोर होने के बीच प्राकृतिक गैस, इस्पात, सीमेंट और बिजली उत्पादन में वृद्धि के साथ बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर बढ़ी। शुक्रवार को जारी आधिकारिक आंकड़े के अनुसार आठ बुनियादी उद्योगों... कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, स्टील, सीमेंट और बिजली...की वृद्धि दर में पिछले साल इसी महीने यानी मार्च 2020 में 8.6 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी थी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़े के अनुसार मार्च महीने में प्राकृतिक गैस, इस्पात, सीमेंट और बिजली उत्पादन में क्रमशः 12.3 प्रतिशत, 23 प्रतिशत, 32.5 प्रतिशत और 21.6 प्रतिशत का उछाल आया। वहीं पिछले साल इसी महीने में इनमें क्रमशः (-) 15.1 प्रतिशत, (-) 21.9 प्रतिशत, (-) 25.1 प्रतिशत और (-) 8.2 प्रतिशत की गिरावट आयी थी। कोयला, कच्चा तेल, रिफाइनरी उत्पाद और उर्वरकों के उत्पादन में इस दौरान गिरावट दर्ज की गयी।

वालमार्ट, फ्लिपकार्ट, सहयोगी इकाइयों ने भारत की कोविड- 19 के खिलाफ लड़ाई में समर्थन बढ़ाया

नयी दिल्ली,

खुदरा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी वालमार्ट ने शुक्रवार को कहा कि वह भारत में कोविड- 19 से राहत पाने के प्रयासों में समर्थन को बढ़ाने के लिये दुनियाभर से संसाधनों को जुटा रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारत इस समय कोरोना वायरस की खतरनाक दूसरी लहर से जूझ रहा है। कंपनी की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि वालमार्ट के वैश्विक प्रौद्योगिकी और सोर्सिंग केन्द्रों के साथ ही वालमार्ट, दि वालमार्ट फाउंडेशन, फ्लिपकार्ट और फोनपे सब मिलकर भारत में आक्सीजन की कमी दूर करने, राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे टीकाकरण अभियान को समर्थन देने और देशभर में समुदायों की सेवा में लगे संगठनों को दान देने का काम कर रहे है।

इसमें वालमार्ट फाउंडेशन द्वारा भारत में काम कर रहे विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों को 14.82 करोड़ रुपये (करीब 20 लाख डालर) का अनुदान भी शामिल है। वालमार्ट इंक के अध्यक्ष और सीईओ डॉग माकमिलॉन ने कहा, ''वालमार्ट एक वैश्विक परिवार है ... हम वालमार्ट की वैश्विक क्षमताओं और फ्लिपकार्ट के वितरण नेटवर्क को एक साथ मिलाकर आक्सीजन आपूर्ति बढ़ाने और जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है उन तक इन्हें पहुंचाने का काम कर रहे हैं। हमारा दिलदिमाग इस समय भारत के लोगों के साथ है।'' वालमार्ट के दुनियाभर में फैले व्यवसाय आक्सीजन कंसनट्रेटर्स और दूसरे उपकरणें को खरीदने और उन्हें पहुंचाने के काम में लगे हैं।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि वालमार्ट आक्सीजन की कमी दूर करने और उसके परिवहन के लिये 20 आक्सीजन जनरेटिंग संयंत्रों और 20 क्रायोजेनिक कंटेनर्स दान में देगा। इसके साथ ही मरीजों को अस्पताल में और घर पर आक्सीजन उपलब्ध कराने के लिये 3,000 आक्सीजन कंसनट्रेटर्स और 500 आक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध करायेगा। इसके अलावा वालमार्ट और वालमार्ट फाउंडेशन, अमेरिका- भारत व्यवसाय परिषद और अमेरिका-भारत स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप फोरम के संयुक्त राहत प्रयासों के तहत 2,500 आक्सीजन कंसन्ट्रेटर्स की भी आपूर्ति करेगा। वालमार्ट कनाडा भी कनेडियन रेड क्रास के जरिये भारत में कोवड-19 राहत प्रयासों में मदद देगा।

चीन का विनिर्माण क्षेत्र अप्रैल में बढ़ा लेकिन वृद्धि रह सकती है धीमी

बीजिंग,

चीन के विनिर्माण क्षेत्र में अप्रैल माह के दौरान वृद्धि रही लेकिन कोरोना वायरस महामारी के बाद अर्थव्यवस्था में आई तेजी के बावजूद वृद्धि दर धीमी रह सकती है। दो सर्वेक्षणों में शुक्रवार को यह दिखाया गया है। बिजनेस मैगजीन केक्सिन द्वारा जारी मासिक पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स मार्च के 11 माह के निचले स्तर 50.6 के मुकाबले अप्रैल में बढ़कर 51.9 पर पहुंच गया। यह आकलन 100- अंक के पैमाने पर किया गया है। इसमें आंकड़ा यदि 100 से ऊपर होता है तो उसका मतलब यह होता है कि गतिविधियों में विस्तार हो रहा है। वहीं चीन की सोख्यिकी एजेंसी और एक उद्योग समूह के अलग सर्वेक्षण में विनिर्माण क्षेत्र का सूचकांक 0.8 अंक गिरकर 51.1 पर आ गया। हालांकि, गिरावट के बावजूद यह 50- अंक से ऊपर बना हुआ है जिसका तात्पर्य यह है कि गतिविधियों में विस्तार हो रहा है। इसमें उत्पादन से जुड़ा एक उप-सूचकांक 1.7 अंक गिरकर 52.2 पर आ गया। केपिटल इकोनोमिक्स के जुलियंस इवांस-प्रित्चार्ड ने एक रिपोर्ट में कहा कि इससे यह पता चलता है कि इस साल आर्थिक वृद्धि की गति में कमी आयेगी। रिपोर्ट के मुताबिक चीन की विनिर्माण और उपभोक्ता खर्च महामारी पूर्व के स्तर पर पहुंच गई, लेकिन सुधार की गति धीमी है। वर्ष 2021 के पहले तीन माह में इससे पिछली तिमाही के मुकाबले 0.6 प्रतिशत की वृद्धि रही। अप्रैल माह के

सर्वेक्षण में नये निर्यात आर्डर का उप- सूचकांक 0.8 अंक गिरकर 50.4 अंक रह गया। यह सर्वेक्षण सांख्यिकी ब्यूरो और चाइना फेडरेशन आफ लाजिस्टिक्स एण्ड एम्प ने किया जिसमें खरीदारी में गिरावट दर्ज की गई।

राहुल बजाज ने छोड़ा बजाज आटो के चेयरमैन का पद, अब नीरज बजाज होंगे नए चेयरमैन

नेशनल डेस्क: देश के सफलतम उद्योगपतियों में शामिल राहुल बजाज ने आखिरकार बजाज आटो के चेयरमैन का पद छोड़ने का फैसला कर लिया है। राहुल बजाज ने दुपहिया और तिपहिया वाहनों के क्षेत्र में बजाज आटो को खड़ा किया और उसे अग्रणी स्थान तक पहुंचाया। पुणे स्थित दुपहिया और तिपहिया वाहन बनाने वाली कंपनी बजाज आटो ने शेयर बाजारों को भेजी नियामकीय सूचना में कहा है कि उसके गैर- कार्यकारी चेयरमैन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उनका इस्तीफा 30 अप्रैल 2021 को कामकाज समाप्त होने के समय से प्रभावी हो जायेगा। कंपनी ने राहुल बजाज के स्थान पर नीरज बजाज को नया चेयरमैन नियुक्त किया है। वह एक मई 2021 से कंपनी के चेयरमैन का कामकाज संभालेंगे। वहीं, राहुल बजाज कंपनी के चेयरमैन एमरीटस बने रहेंगे। उन्हें एक मई 2021 से पांच साल के लिये कंपनी का चेयरमैन एमरीटस बनाया गया है। राहुल बजाज वर्ष 1972 से ही कंपनी के गैर- कार्यकारी चेयरमैन का कार्यभार संभाले हुये हैं। वह बजाज आटो समूह से पिछले पांच दशकों से जुड़े हुये हैं। कंपनी ने नियामकीय सूचना में कहा है कि राहुल बजाज की आयु 83 साल हो गई है। अपनी बढ़ी उम्र को देखते हुये उनहोंने कंपनी के गैर-कार्यकारी निदेशक और चेयरमैन के पद से इस्तीफा दे दिया। कंपनी ने कहा है कि बजाज आटो समूह की सफलता में राहुल बजाज का बहुत अधिक योगदान रहा है। उनके पिछले पांच दशकों के लंबे अनुभव और कंपनी के हित में उनके अनुभव, ज्ञान और बुद्धि का एक सलाहकार के तौर पर समय समय पर लाभ उठाते हुये कंपनी के निदेशक मंडल ने उन्हें कंपनी का चेयरमैन एमेरीटस नियुक्त करने को मंजूरी दे दी। राहुल बजाज ने 1965 में बजाज समूह की कमान संभाली थी। उस समय भारत एक बंद अर्थव्यवस्था थी। उन्होंने कंपनी का नेतृत्व करते हुये बजाज चेतक नाम का स्कूटर बनाया। इस स्कूटर को काफी नाम मिला और इसे भारत के मध्यम वर्गीय परिवार की आकांक्षा का सूचक माना गया। इसके बाद कंपनी लगातार आगे बढ़ती चली गई। नब्बे के दशक में जब भारत में उदारीकरण की शुरुआत हुई और भारत एक खुली अर्थव्यवस्था की तरफ बढ़ गया और जापानी मोटर साइकिल कंपनियों से भारतीय दुपहिया वाहनों को कड़ी टक्कर मिलने लगी, उस समय भी राहुल बजाज ने कंपनी को आगे बढ़ाया।

विप्रो को जून तिमाही में 8 से 10 प्रतिशत वृद्धि की उम्मीद, काप्को अधिग्रहण के बाद बढ़ाया अनुमान

नयी दिल्ली,

सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी विप्रो ने शुक्रवार को जून 2021 में समाप्त होने वाली तिमाही के दौरान आईटी सेवा राजस्व परिदृष्य में आठ से 10 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान व्यक्त किया है। कंपनी ने काप्को का 1.45 अरब डालर में अधिग्रहण करने के बाद अपने राजस्व अनुमान को संशोधित किया है। कंपनी ने इससे पहले इस महीने की शुरुआत में मार्च तिमाही के परिणाम जारी करते हुये जून में समाप्त होने वाली मौजूदा तिमाही के दौरान आईटी सेवाओं के राजस्व में 2 से 4 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान व्यक्त किया था। तब लगाये गये अनुमान में कंपनी के काप्को और एम्पियोन के अधिग्रहण से मिलने वाले राजस्व को शामिल नहीं किया गया था। विप्रो ने मार्च में लंदन मुख्यालय वाले काप्को का 1.45 अरब डालर (10,500 करोड़ रुपये से अधिक) के सौदे में अधिग्रहण किये जाने की घोषणा की थी। कंपनी का यह अब तक का सबसे बड़ा अधिग्रहण सौदा है। विप्रो ने नियामकीय सूचना में कहा है कि काप्को का अधिग्रहण 29 अप्रैल 2021 को पूरा हो गया। इसमें कहा गया है कि अधिग्रहण पूरा होने के बाद कंपनी ने अप्रैल- जून तिमाही के लिये राजस्व अनुमान को संशोधित किया है। ''हमारा अनुमान है कि सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं के व्यवसाय से मिलने वाला राजस्व 232.40 करोड़ रुपये से लेकर 236.70 करोड़ रुपये के दायरे में रहेगा। यह तिमाही दर तिमाही आधार पर 8 से 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। '' हालांकि, विप्रो के इस संशोधित अनुमान में हाल में किये गये एम्पियोन का अधिग्रहण सौदा शामिल नहीं है। सूचना में यह कहा गया है। विप्रो ने इसी माह की शुरुआत में आस्ट्रेलिया स्थित साइबर सुरक्षा, परिचालन विकास और इंजीनियरिंग सेवा प्रदाता कंपनी एम्पियोन का 11.70 करोड़ डालर में अधिग्रहण करने की घोषणा की। यह सौदा इसी तिमाही में पूरा होने की उम्मीद है। कंपनी ने मार्च 2021 को समाप्त तिमाही के दौरान आईटी सेवाओं से 215.24 करोड़ डालर का राजस्व हासिल किया। इससे पिछले तिमाही के मुकाबले इसमें 3.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कंपनी को अपने कुल कारोबार का बड़ा हिस्सा आईटी सेवाओं से ही प्राप्त होता है। मार्च तिमाही में कंपनी को उसके कारोबार से मिलने वाला कुल राजस्व 3.4 प्रतिशत बढ़कर 16,245.4 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

क्रांति समय

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आईपीएल 2021: सीएसके के विजय अभियान पर रोक लगाने की कोशिश करेगा मुंबई इंडियन्स

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

उतार चढ़ाव वाले अपने अभियान को पटरी पर लाने के लिये बेताब मौजूदा चैंपियन मुंबई इंडियन्स शनिवार को यहां होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मैच में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के विजय अभियान पर रोक लगाने की कोशिश करेगा। यूएई में पिछले साल खेले गये टूर्नामेंट में प्लेआफ में जगह बनाने में नाकाम रहा सीएसके इस बार बदले इरादों के साथ मैदान पर उतरा है और पहला मैच गंवाने के बाद उसने लगातार पांच मैचों में जीत दर्ज की है। इससे महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई वाली टीम अंकतालिका में 10 अंक लेकर शीर्ष पर है। मुंबई इंडियन्स का प्रदर्शन अब तक उतार चढ़ाव वाला रहा है। उसने छह मैचों में केवल तीन में जीत हासिल की है लेकिन फिरोजशाह कोटला में ही खेले गये पिछले मैच में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ सात विकेट की जीत से टीम का मनोबल बढ़ा होगा। लेकिन उसका सामना अब हर विभाग में अच्छा प्रदर्शन कर रहे सीएसके से है। धोनी की टीम ने भी मुंबई की तरह दिल्ली चरण की अच्छी शुरुआत करके सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ सात विकेट से जीत दर्ज की थी।

इस मैच का परिणाम काफी हद तक दोनों टीमों के शीर्ष क्रम के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा। मुंबई के कप्तान रोहित शर्मा ने अच्छी शुरुआत की लेकिन बड़े स्कोर बनाने में माहिर हिटमैन वर्तमान आईपीएल में अभी तक अपना यह कौशल नहीं दिखा पाये हैं। मुंबई के लिये अच्छी खबर यह है कि न सिर्फ सलामी बल्लेबाज क्विंटन डिकॉक ने पिछले मैच में फार्म में वापसी की बल्कि उसके मध्यक्रम के बल्लेबाजों विशेषकर क्रूणाल पंड्या ने भी लय हासिल करने की झलक दिखायी। सूर्यकुमार यादव को अपनी अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में बदलना होगा जबकि कीरोन पोलार्ड को भी अपनी आक्रामकता बरकरार रखने की जरूरत है। यह देखना होगा कि इशान किशन को अंतिम एकादश में जगह मिलती है या नहीं। मुंबई को यदि चेन्नई का विजय अभियान रोकना है तो उसे दीपक चाहर, सैम करेन और रविंद्र जडेजा जैसे गेंदबाजों की अनुशासित गेंदबाजी के सामने अपना सर्वश्रेष्ठ कौशल दिखाना होगा। चेन्नई के मध्यक्रम की अभी तक खास परीक्षा नहीं हुई है क्योंकि फाफ डुप्लेसिस और रुतुराज गायकवाड़ ने पिछले कुछ मैचों में टीम को शानदार शुरुआत दिलाकर जीत में अहम भूमिका निभायी। इन दोनों के लिये ट्रेंट बोल्ट और जसप्रीत बुमराह के सामने अपनी बेहतरीन फार्म बनाये रखना चुनौती होगी।

बोल्ट और बुमराह डेथ ओवरों में भी कारगर साबित हुए हैं। कोटला की धीमी पिच पर लेग स्पिनर राहुल चाहर की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने अभी तक 11 विकेट लिये हैं। उन्हें दूसरे छोर से क्रुणाल और जयंत यादव से सहयोग की दरकार है। चेन्नई डुप्लेसिस (270 रन) और गायकवाड़ (192 रन) से फिर से अच्छी शुरुआत की उम्मीद कर रहा होगा। मध्यक्रम में मोईन अली (148 रन) ने अच्छी भूमिका निभायी है। सुरेश रैना की मौजूदगी से उसके मध्यक्रम को मजबूत मिली है जबकि निचले क्रम में जडेजा अपनी भूमिका से पूरा न्याय कर रहे हैं। जडेजा गेंदबाजी में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और वह मुंबई के बल्लेबाजों को परेशानी में डाल सकते हैं।

क्रिकेट सचिन तेंदुलकर ने कोविड मरीजों की मदद के लिए एक करोड़ रुपये दान दिए

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

महान क्रिकेट सचिन तेंदुलकर ने गुरुवार को कोविड-19 मरीज के लिए आक्सीजन कनसंट्रेटर्स खरीदन के इरादे से एक करोड़ रुपये दान दिए। तेंदुलकर ने उस समय यह राशि दान दी है जब देश इस महामारी से बुरी तरह जूझ रहा है। भारत में कोविड-19 संक्रमितों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है और बुधवार को एक दिन में सर्वाधिक तीन लाख 79 हजार 257 नए संक्रमित मामले सामने आए। इस संकट से देश की स्वास्थ्य प्रणाली भी जूझ रही है और संक्रमितों के लिए आक्सीजन और महत्वपूर्ण दवाइयों की व्यवस्था नहीं हो पा रही है।

आक्सीजन कनसंट्रेटर्स मशीन आयात करने और इसे जरूरतमंद अस्पतालों में दान करने के लिए दिल्ली-एनसीआर स्थित कारोबारियों की कोष जुटाने की पहल मिशल आक्सीजन ने बयान में कहा, ''उनका (तेंदुलकर का) मिशन आक्सीजन को दान दिल हो छूने वाला है जो जरूरत के समय देश भर के अस्पतालों के लिए जीवन रक्षक आक्सीजन कनसंट्रेटर्स खरीदने और मुहैया कराने के लिए काम कर रहा है।'' इस घातक संक्रमण के लिए पॉजिटिव पाए जाने के बाद स्वयं भी अस्पताल में कुछ समय बिताने वाले मुंबई के 48 साल के तेंदुलकर ने ट्विटर के जरिए इस पहल की सराहना की।

तेंदुलकर ने अपने ट्विटर हैंडल पर लिखा, ''कोविड की दूसरी लहर ने हमारी स्वास्थ्य प्रणाली को बेहद दबाव में डाल दिया है। कोविड के गंभीर मरीजों को बड़ी संख्या में आक्सीजन मुहैया कराना समय की जरूरत है।'' उन्होंने कहा, ''यह दिल को छूने वाला है कि कैसे लोग इस समय मदद के लिए आगे आ रहे हैं। 250 से अधिक युवा कारोबारियों के समूह ने आक्सीजन कनसंट्रेटर्स खरीदने और इसे देश भर के अस्पतालों को दान में देने के इरादे से कोष जुटाने के लिए मिशन आक्सीजन शुरू किया है।'' तेंदुलकर ने कहा कि जब वह पात्र होंगे तो प्लाज्मा भी देंगे।

भारत और इंग्लैंड के खिलाड़ियों के साथ ब्रिटेन जा सकते हैं ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर : ग्लेन मैक्सवेल

अहमदाबाद। (एजेंसी)।

ऑस्ट्रेलिया के स्टार आलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने कहा कि उन्हें और उनके देश के अन्य क्रिकेटरों को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के बाद भारत, न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के खिलाड़ियों को ले जाने वाले विशेष विमान से ब्रिटेन जाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस पर सहमित व्यक्त की कि मई के आखिरी सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय यात्रा दिशानिर्देशों को देखने के बाद इस विकल्प पर विचार किया जा सकता है। भारत में कोविड-19 के मामले बढ़ने के कारण भारत से आस्ट्रेलिया के लिये सभी व्यावसायिक उड़ानें बंद कर दी गयी हैं।

मैक्सवेल ने 'द फाइनल वर्ड पॉडकॉस्ट' से कहा, ''हम केवल स्वदेश जाने का रास्ता ढूंढना चाहते हैं। बीसीसीआई और दोनों सरकारें समाधान निकालने के लिये काम कर सकती है। यदि हमें थोड़ा इंतजार करना होगा तो ऐसा हो सकता है लेकिन किसी चरण में स्वदेश लौटने का रास्ता तो स्पष्ट होना चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''भारत और इंग्लैंड को इंग्लैंड में श्रृंखला खेलनी है। स्थिति बद से बदतर भी होती है तो हमें इंग्लैंड में इंतजार करना होगा और विशेष विमान से भारत से बाहर जाना होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इससे अधिकतर खिलाड़ी सहमत होंगे।'' भारत और न्यूजीलैंड के बीच 18 जून से विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल खेला जाएगा और इसके लिये उन्हें आईपीएल के बाद इंग्लैंड जाना होगा। इंग्लैंड के खिलाड़ी उसी उड़ान से स्वदेश लौट सकते हैं।

बीसीसीआई के कोषाध्यक्ष अरुण धूमल ने कहा कि इस विकल्प पर विचार किया जा सकता है क्योंकि बोर्ड विदेशी खिलाड़ियों की सुरक्षित घर वापसी के लिये कई विकल्पों पर विचार कर रहा है। धूमल ने कहा, ''इंग्लैंड की यात्रा करके वहां से आस्ट्रेलिया जाने के विकल्प पर विचार किया जा सकता है। कई तरह के विकल्प हैं और बीसीसीआई निश्चित तौर पर सबसे सुरक्षित विकल्प को चुनने की कोशिश करेगा जिसमें खिलाड़ियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा से समझौता नहीं होगा।'' मैक्सवेल ने कहा कि आईपीएल समाप्त होने के बाद जैव सुरक्षित वातावरण (बायो बबल) समाप्त हो जाएगा और वे सुरक्षित मार्ग से स्वदेश लौटना चाहेंगे। आस्ट्रेलिया के तीन खिलाड़ी आईपीएल से हट गये हैं लेकिन अब भी उसके 14 खिलाड़ी इसमें भाग ले रहे हैं। मैक्सवेल ने कहा, ''एक बार आईपीएल समाप्त होने के बाद बायो बबल भी टूट सकता है और ऐसे में आप यहां नहीं रहना चाहोगे। हमें सबसे सुरक्षित मार्ग तलाशना होगा।

नौ के बजाय पांच शहरों में हो सकता है आईसीसी टी-20 विश्व कप, बीसीसीआई को यकीन भारत में ही होगा टूर्नामेंट

नई दिल्ली (एजेंसी)।

भारत में बढ़ते कोरोना मामलों के बीच बीसीसीआइ को यकीन है कि टी-20 विश्व कप अक्टूबर में भारत में ही होगा, हालांकि इसे नौ की बजाय पांच शहरों में कराया जा सकता है। परंपरा यही है कि आइसीसी बैकअप में विकल्प तैयार रखता है और पिछले एक साल से वह विकल्प यूएई है। आइपीएल इस समय बायो-बबल में हो रहा है, लेकिन बीसीसीआइ के सामने असल चुनौती टी-20 विश्व कप प्रतिकूल परिस्थितियों में कराने की है। बोर्ड के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि अभी पांच महीने का समय है और लोगों को वैक्सीन मिल रही हैं तो विश्व कप भारत में ही होगा। यह हो सकता है कि नौ शहरों की बजाय मैच चार या पांच शहरों में हो।' आइसीसी के एक निरीक्षण दल को 26 अप्रैल को दिल्ली आकर आइपीएल के बायो-बबल का जायजा लेना था, लेकिन भारत यात्रा पर लगे प्रतिबंध के कारण दौरा स्थगित करना पड़ा। अधिकारी ने कहा, 'उस टीम को इस सप्ताह आना था, लेकिन यात्रा प्रतिबंध लागू होने से वे बाद में आएंगे।' बीसीसीआइ महाप्रबंधक (खेल विकास) धीरज मलहोत्रा ने शुक्रवार को बीबीसी से कहा था कि यूएई विकल्प रखा गया है।' बोर्ड के अधिकारी ने हालांकि कहा कि परंपरा के तहत यूएई हमेशा दूसरा विकल्प रहता ही है। उन्होंने कहा, 'आइसीसी टूर्नामेंटों के लिए हमेशा एक विकल्प रहता है और पिछले साल आइसीसी की बैठक में तय होने के बाद यूएई विकल्प है। धीरज ने जो कहा उसमें कुछ नया नहीं है। अगर अगले पांच महीने में हालात समान रहते हैं तो दूसरी योजना तैयार रखनी होगी।' श्रीलंका, बांग्लादेश या दूसरे देशों में आइसीसी टी-20 विश्व कप तीन या चार शहरों में ही होता है, लेकिन भारत में बोर्ड की राजनीति के कारण ऐसा संभव नहीं है। विश्व कप 2011 और टी-20 विश्व कप 2016 के आयोजन से जुड़े रहे बोर्ड के अधिकारी ने कहा, 'यहां बोर्ड अध्यक्ष सौरव गांगुली का शहर (कोलकाता), उपाध्यक्ष राजीव शुक्ल का शहर (लखनऊ), सचिव जय शाह का शहर (अहमदाबाद) और कोषाध्यक्ष अरुण धूमल का शहर (धर्मशाला) है। इसके अलावा मुंबई, चेन्नई, दिल्ली, बेंगलुरु और हैदराबाद भी तो हैं।

कुश्ती के दौरान सिर के बल गिरने के एक महीने बाद सूमो पहलवान की मौत

तोक्यो। जापान में सूमो कुश्ती के दौरान सिर के बल गिरने के एक महीने के बाद 28 वर्षीय पहलवान हिबिकिरोयू की मौत हो गयी। जापान सूमो संघ ने गुरूवार को बताया कि हिबिकिरोयू की मौत सांस लेने में परेशानी से हुई। इस घटना के बाद जापान में खेल के दौरान चिकित्सा आपात स्थिति की प्रतिक्रिया पर सवाल उठने लगे हैं। हिबिकिरोयू का असली नाम मितसुकि अमानो था। एक टूर्नामेंट में 26 मार्च को बाउट (कुश्ती) के दौरान प्रतिद्वंद्वी पहलवान ने उन्हें सिर के बल पटक दिया था। इसके बाद वह कुछ मिनटों तक अचेत रहे। सूमो अधिकारियों ने थोड़ा इंतजार करने के बाद

चिकित्सकों को बुलाया। स्ट्रेचर पर ले जाते समय वह होश में आ गये थे। इस पहलवान ने सूमोअधिकारियों से कहा कि ऐसा लगा रहा कि उसका निचला शरीर लकवाग्रस्त हो गया है। निकान स्पोर्ट्स के मुताबिक अस्पताल में उनकी स्थिति में सुधार हो रहा था। जापानी मीडिया के अनुसार घटना के बाद सूमो पहलवान को प्राथमिक उपचार देने के लिए वहां कोई चिकित्साकर्मी मौजूद नहीं था। सूमो अधिकारियों ने कहा कि हिबिकिरोयू की मौत चोट से जुड़ी हुई है। हिबिकिरोयू ने 2011 में पदार्पण किया था।

आईपीएल वेतन का कुछ हिस्सा भारत में कोविड-19 राहत के लिए दान करेंगे: निकोल्स पूरन

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

पंजाब किंग्स के बल्लेबाल निकोल्स पूरन ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की कमाई का कुछ हिस्सा कोरोना वायरस महामारी से बुरी तरह से जूझ रहे भारत के लिए दान देने का फैसला किया है। भारत में कोविड-19 संक्रमितों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है और गुरूवार को तीन लाख 86 हजार नए संक्रमित मामले सामने आए। पूरन ने इसके साथ ही भारत के लोगों से जल्द से जल्द टीका (वैक्सीन) लगवाने का अनुरोध किया। ट्विटर पर जारी वीडियो में पूरन ने कहा, ''अगर आप टीका लगवा सकते हैं तो कृपया इसे करिये, मैं अपने हिस्सा का काम करूंगा जिसमेंभारत के लिए प्रार्थना करना जारी रखने के साथ इस संकट से उबरने के लिए अपने आईपीएल वेतन का एक हिस्सा दान करना चाहूंगा।'' वेस्टइंडीज का प्रतिनिधित्व करने वाले 25 साल के इस क्रिकेटर को पता है कि इस संकट से देश की स्वास्थ्य प्रणाली भी जूझ रही है। उन्होंने कहा, '' मैं दुनिया भर में अपने सभी प्रशंसकों एवं समर्थकों को बताना चाहता हूं कि मैं भारत में आईपीएल (बायो-बबल) में सुरक्षित और बेहतर स्थिति में हूं।'' उन्होंने कहा, ''लेकिन इस तरह की त्रासदी के इतने करीब होना भी हमारे दिलों को तोड़ने वाली बात है। एक ऐसे देश के लिए जिसने हमें वर्षों से इतना प्यार और समर्थन दिखाया है, मैं अपने साथी खिलाड़ियों के साथ मिलकर भारत में इस स्थिति को लेकर कुछ जागरूकता लाने में मदद कर सकता हूं।'' मौजूदा सत्र में पंजाब किंग्स के लिए छह मैच खेलने वाले पूरन से पहले उनकी फ्रेंचाइजी ने भी आक्सीजन कनसंट्रेटर्स दान करने का वादा किया था। पूरन ने कहा, ''अब भी कई अन्य देश महामारी से प्रभावित हो रहे हैं लेकिन भारत में मौजूदा स्थिति बेहदगंभीर है। मैं इस विकट स्थिति में वित्तीय सहायता के साथ जागरूकता लाने में अपनी भूमिका निभाऊंगा।

जबरदस्त बल्लेबाजी करने वाले पृथ्वी साव बोले, मैं अपना स्वाभाविक खेल दिखा रहा था

अहमदाबाद। (एजेंसी)

कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ 41 गेंद में 82 रन बनाकर दिल्ली कैपिटल्स को सात विकेट से जीत दिलाने वाले सलामी बल्लेबाज पृथ्वी साव ने कहा कि वह रनों के बारे में नहीं सोचकर अपना स्वाभाविक खेल दिखा रहे थे। साव ने मैच के बाद कहा ,''मैं कुछ नहीं सोच रहा था। सिर्फ ढीली गेंदों का इंतजार कर रहा था। मुझे पता था कि शिवम (मावी) मुझे कहां गेंद डालेगा क्योंकि हमने जूनियर स्तर पर चार पांच साल साथ में खेला है।'' उन्होंने कहा ,'' जब मुझे लगता है कि मैं फॉर्म में हूं तो मैं रनों के बारे में नहीं सोचता। मैं अपने बारे में भी नहीं सोचता, इरादा सिर्फ टीम को जिताने का होता है। ''आस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय टीम से बाहर होने के बाद घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन करने वाले साव ने कहा ,'' मेरे पिता ने उस समय मेरी काफी हौसलाअफजाई की। उन्होंने कहा कि अपना नैसर्गिक खेल दिखाते रहो। मैंने काफी मेहनत की और क्रिकेट में उतार चढाव तो आते रहते हैं।

आईपीएल 2021 : कोरोना पीड़ितों की मदद के लिए आगे आए शिखर धवन, 20 लाख रुपये के डोनेशन के साथ किया ये एलान

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स के सलामी बल्लेबाज शिखर धवन कोरोना पीड़ितों की मदद के लिए आगे आए हैं। उन्होंने ऑक्सीजन की ऑपूर्ति के लिए चलाए जा रहे मिशन ऑक्सीजन को 20 लाख रुपये डोनेशन देने का एलान किया है। इसके साथ ही उन्होंने घोषणा की वो आईपीएल में मिलने वाले सभी व्यक्तिगत अवाड्र्स की धनराशि भी इस काम के लिए देंगे। भारत इस समय कोविड 19 की दूसरी महामारी का सामना कर रहा है। धवन ने शुक्रवार को ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। धवन ने लिखा कि हम सभी अभी बेहद खराब दौर से गुजर रहे हैं, हमें इस वक्त एक दूसरे की मदद करनी चाहिए और ये समय की मांग है। कई सालों से मुझे बेतहाशा प्यार व समर्थन मिला, जिसके लिए मैं आभारी हूं, आज वक्त आया है कि मैं देश के लोगों के काम आऊं। उन्होंने आगे लिखा कि मैं 20 लाख रुपये का दान करूंगा। इसके साथ ही सभी मैच के बाद के व्यक्तिगत प्रदर्शन पुरस्कारों से भी जो पैसा कमाऊंगा, वो मैं मिशन ऑक्सीजन के माध्यम से ऑक्सीजन की आवश्यकता को पूरा करने में दूंगा।

न्यूजीलैंड के पूर्व ऑलराउंडर स्कॉट स्टाइरिस ने बताया, पंजाब किंग्स का ये खिलाड़ी बन सकता है हार्दिक पांड्या जैसा धाकड़ ऑलराउंडर

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

न्यूजीलैंड के पूर्व ऑलराउंडर स्कॉट स्टाइरिस का मानना है कि पंजाब किंग्स की तरफ से खेल रहे शाहरुख खान हार्दिक पांड्या जैसे खतरनाक ऑलराउंडर बन सकते हैं। आईपीएल 2021 में पंजाब की तरफ से उन्होंने डेब्यू किया। आईपीएल के अपने पहले सीजन में शाहरुख खान ने हालांकि पांच पारियों में मात्र 103 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 135.52 का रहा है। हालांकि उन्होंने पंजाब की तरफ से अभी कोई बड़ी पारी नहीं खेली है। लेकिन उन्होंने दिखाया कि फिनिशर बनने की संभावना है।

शाहरुख को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में उनके शानदार फॉर्म के कारण पंजाब में 5.2 करोड़ रुपये में खरीदा था। उन्होंने आईपीएल 14 में पांच पारियों में 6 *, 47, 15 *, 22 और 13 रन बनाए हैं। दिग्गज ऑलराउंडर स्कॉट स्टाइरिस का मानना है कि युवा बल्लेबाज को फिनिशर बनने में कुछ समय लग सकता है। उन्होंने कहा कि उनके बेहतर होगा कि वो हार्दिक पांड्या को अपना रोल मॉडल बनाएं। उन्होंने आगे कहा कि मुझे लगता है कि उनके कंधो में बहुत दबाव है। उन्हें खेलने दो और विकसित होने दो। लोग अलग तरह की गति के साथ विकसित होते हैं। उसे भरोसेमंद फिनिशर बनने के लिए दो या चार सीजन भी लग सकते हैं।

स्टाइरिस ने आगे कहा कि मैंने शाहरुख खान को काफी खेलते हुए देखा है क्योंकि तमिलनाडू प्रीमियर लीग (टीएनपीएल) में मैंने कमेंट्री की है और उस लीग में उसने गेंद पर दमदार शॉट्स जमाए थे। मुझे देखकर खुशी हुई कि उसने ऐसा ही खेल सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में तमिलनाडु टीम के लिए खेला और इस तरह उसे जगह मिली।

डॉमिनिक कॉर्क ने हाल ही में कहा था कि जिन खिलाड़ियों का विकास हो तो उन्हें भारत चले जाना चाहिए। स्थानीय लीग का यह भी फायदा है। इनका प्रसारण करके खिलाड़ियों पर दबाव भी बना सकती है। यह फर्स्ट क्लास टीम में विकास करें और फिर आईपीएल और इसके आगे राष्ट्रीय टीम में भी आ सकते हैं। शाहरुख खान को अन्य सभी अनकैप्ड खिलाड़ियों के जैसे खेलने दो। उसे अपने आप विकास करने दो। आस-पास बड़े खिलाड़ियों से सीखेगा और कब क्या होगा आप भी नहीं जानते कि उससे क्या आएगा।

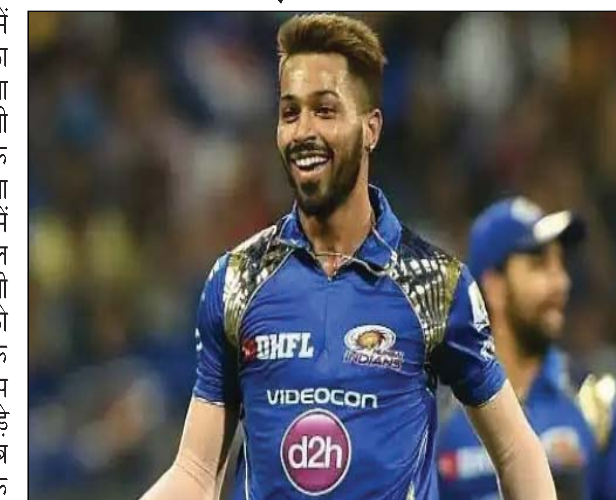

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

मालदीव से वापस लौटीं जाह्नवी कपूर

वैकेशन की तस्वीरें पोस्ट कर आखिर क्यों लिखा

'आई एम सॉरी'

जाह्नवी कपूर मालदीव से वापस लौट आई हैं। उन्हें बीती रात को अपनी ट्रेनर नम्रता पुरोहित के साथ मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया। इससे पहले वो मालदीव में सारा अली खान के साथ वर्कआउट करती दिखी थीं उनका वो वीडियो काफी वायरल हुआ था। जाह्नवी ने अपने इंस्टाग्राम पर मालदीव वैकेशन की कुछ नई तस्वीरें शेयर की हैं। एक तस्वीर में जान्हवी समंदर के किनारे खड़ी हैं और वो सूरज को निहार रही हैं। वहीं दूसरी तस्वीर में वो बैठी हुई हैं और कैमरे की ओर देखते हुए पोज दे रही हैं। जाह्नवी ने इस दौरान व्हाइट कलर का क्रॉप टॉप और डेनिम शॉर्ट्स पहने हुए हैं। तस्वीरों के साथ उन्होंने एक लंबा चौड़ा नोट लिखा और माफी मांगी है। आखिर उन्होंने ये माफी क्यों मांगी आगे बताते हैं।

सोशल मीडिया पर मांगी माफी

जाह्नवी लिखती हैं कि 'मुझे माफ करिए, आपने हमें इतना दिया लेकिन मैं उसकी कद्र नहीं कर पाए। मुझे माफ करिए हर उस सेकेंड के लिए, जब आपकी इतनी खूबसूरती को भूल गए।' जान्हवी आगे लिखती हैं कि 'आप कभी भी उस धैर्य से पीछे नहीं हटी, आपने इंतजार किया कि हम देखभाल करेंगे, माफ करिए।' दरअसल जाह्नवी ने यह पोस्ट वर्ल्ड अर्थ डे को समर्पित किया है। जिसमें वो प्रकृति को शुक्रिया कर रही हैं।

जाह्नवी की आने वाली फिल्में

जाह्नवी की बात करें तो उनकी फिल्म 'रूही' कुछ समय पहले रिलीज हुई थी। फिल्म में उनके साथ राजकुमार राव और वरुण शर्मा थे। इसके अलावा जाह्नवी फिल्म 'गुड लक जेरी' और 'दोस्ताना 2' में काम कर रही हैं।

सारा के साथ दिखी बॉन्डिंग

सारा ने एक वीडियो पोस्ट किया था जिसमें वो जाह्नवी कपूर के साथ स्विमिंग पूल के किनारे हैं और वर्कआउट कर रही हैं। उनके साथ उनकी ट्रेनर नम्रता पुरोहित भी हैं। जो दोनों पर निगरानी रखे हुए हैं। सारा और जान्हवी साथ में कई तरह की एक्सरसाइज करती दिख रही हैं। इस दौरान दोनों एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कुराती भी हैं। सारा ने वीडियो शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा- 'इसी तरह आपको गोल्डन ग्लो मिलेगा।'

सोनाक्षी सिन्हा ने फिर दिखाया अपना ट्रांसफॉर्मेशन लुक

फोटो में दबंग गर्ल को पहचान पाना हुआ मुश्किल

अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी से अपनी एक फोटो शेयर की है। जिसमें उनका गजब का ट्रांसफॉर्मेशन दिख रहा है। फोटो में सोनाक्षी को पहचान पाना मुश्किल हो रहा है। उनकी ये फोटो सोशल मीडिया पर अब वायरल हो चुकी है।

शानदार है सोनाक्षी का ट्रांसफॉर्मेशन

- अब एक्ट्रेस की फोटो में उनके लुक की बात करें तो आप देख सकते हैं कि खुले बालों में अपना बैक साइड फ्लॉन्ट करते हुए नजर आ रही हैं। वह स्पोर्ट आउटफिट में पिंक मैट पर खड़ी होकर सूर्य नमस्कार योग कर रही हैं।
- फोटो में लोग उनकी कर्वी फिगर को देखकर कंफ्यूज्ड है कि ये सोनाक्षी सिंहा हैं या कोई और। सोनाक्षी का ट्रांसफॉर्मेशन वाकई में शानदार लग रहा है। सोनाक्षी की ये लेटेस्ट तस्वीरों से साफ जाहिर होतो है कि वह घर पर रहकर ही अपनी फिटनेस पर काफी मेहनत कर रही हैं।
- अंगूरी भाभी उर्फ शुभांगी अत्रे को मिला बिग बॉस 15 और नच बलिए 10 का ऑफर, इन रियलिटी शोज को लेकर बोली ये बड़ी बात

इन फोटोज में दिखा सोनाक्षी का ट्रांसफॉर्मेशन

इससे पहले भी उन्होंने एक फोटो शेयर की थी, जो लोगों द्वारा काफी पसंद की गई थी। वह इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लिखा, जब आपके लिए प्रङ्क्स्र॥ का मतलब वर्कआउट फॉम होम। इस पोस्ट में सोनाक्षी ने अपनी दो तस्वीरें साझा की थीं। एक तस्वीर में वो पोज देती नजर आई थीं तो वहीं दूसरी तस्वीर में वर्कआउट करती करते दिखीं थी।

सोनाक्षी की अपकमिंग फिल्में

अब एक्ट्रेस की प्रोफेशनल वर्क की बात करें तो सोनाक्षी को जल्द ही अजय देवगन के संग फिल्म भुज- द प्राइड ऑफ इंडिया में देखा जाएगा। इस फिल्म में संजय दत्त भी नजर आने वाले हैं। साथ ही सोनाक्षी अमेज़न पर फॉलेन नाम की सीरीज में नजर आने वाली हैं। इस सीरीज में वह एक पुलिस अफसर रोल में दिखेंगी।

एक और मुसीबत

पिता की मौत के 6 दिन बाद हिना खान की कोरोना रिपोर्ट आई पॉजिटिव

टीम हिना ने सोशल मीडिया पर शेयर किया

पिछले मंगलवार को हिना खान के पिता असलम खान का निधन हो गया था। कार्डियक अरेस्ट उनकी मौत की वजह बनीं। लेकिन उस वक्त हिना खान उनके पास नहीं थीं। वे कश्मीर में शूटिंग कर रही थीं। अब 6 दिन बाद सोशल मीडिया पर टीम हिना ने शेयर किया है कि उनकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है।

टेस्ट करवाने की अपील की

हिना ने लिखा- मेरे और मेरे परिवार के लिए इस बेहद मुश्किल और चुनौती भरे वक्त के बीच मैं कोरोना वायरस पॉजिटिव हो गई हूं। अपने डॉक्टर्स के निर्देशों का पालन कर रही हूं और सभी प्रिकॉशन लेते हुए मैंने खुद को क्वारैंटाइन कर लिया है। मैं अपने संपर्क में आए सभी लोगों से अपील करती हूं कि वे अपना टेस्ट करवाएं। मुझे आप सब की दुआओं की जरूरत है। सुरक्षित रहें और ध्यान रखें।

खुद हिना ने दी थी जानकारी

इससे पहले हिना खान ने एक पोस्ट शेयर कर लिखा था, मेरे प्यारे पिता असलम खान 20 अप्रैल 2021 को हम सब को छोड़कर जन्नत में चले गए। इस मुश्किल समय में मेरे और मेरी फैमिली के साथ खड़े रहने के लिए मैं आप सभी की आभारी हूं। मैं और मेरी फैमिली शोक में डुबे हुए हैं। ऐसे में मेरे सभी सोशल मीडिया अकाउंट्स अब मेरी टीम ही हैंडल करेगी और आपको मेरे अपकमिंग प्रोजेक्ट्स के बारे में अपडेट देती रहेगी। आपके प्यार और सपोर्ट के लिए सभी का शुक्रिया। पिता के निधन के बाद हिना की यह पहली पोस्ट थी।

फिल्म में तापसी पन्नू तीन अलग-अलग लुक में आएंगी नजर

कैरेक्टर की बॉडी लैंग्वेज में जाने के लिए 5 से 6 घंटे करती थीं ट्रेनिंग

तापसी पन्नू की झोली फिल्मों से भरी हुई है। आलम यह है कि एक ही टाइमफ्रेम में उनकी दो स्पोर्ट्स जॉनर की फिल्में आ रही हैं। एक क्रिकेट को लेकर शाबाश मिथु और दूसरी बतौर धावक रश्मि रॉकेट है। फिल्म से जुड़े सूत्रों ने बताया, रश्मि रॉकेट में तापसी का किरदार गुजरात के कच्छ के दूर दराज के इलाके से है। वह कच्छ के रण की रनर हैं। उसे ऑथेंटिक दिखाने के लिए तापसी ने कच्छ के अंगिया में मॉडिफिकेशन करवाया। वहां की युवतियां जो अंगिया पहनती हैं, उन्हीं में थोड़ी तब्दीली कर सलवार कमीज बनवाया गया और उस कॉस्ट्यूम में रनिंग के शॉर्ट्स दिए। कॉस्ट्यूम की खोज में प्रोडक्शन की टीम कच्छ के पास भुजौरी गई। वहां के लोकल आर्टिस्टों कच्छ की फैब्रिक और ज्वेलरी को बनवाया गया।

जनवरी में पूरी हो चुकी है रश्मि रॉकेट की शूटिंग

रश्मि रॉकेट की शूटिंग तो जनवरी में ही पूरी हो चुकी है। पूरी फिल्म में तापसी तीन अलग लुक में नजर आएंगी। पहला लुक कच्छ के रण से ताल्लुक रखने वाली युवती का है। फिर नेशनल लेवेल पर उनका सेलेक्शन होता है। वहां ज्यादा एक्सोपजर मिलता है, तो लुक बदलता है। तीसरा लुक उनके उस स्टेज से है, जब वो दुनियाभर में ट्रैवल करती हैं। स्टेट, नेशनल और इंटरनेशनल लेवेल पर जो स्पोर्ट्स के किट्स में बदलाव आता जाता है, उसमें डिजाइनिंग की गई है।

फिल्म की शूटिंग देश के 4 से 5 अलग शहरों में हुई

तापसी के करीबियों ने बताया, फिल्म की शूटिंग देश के चार से पांच अलग शहरों में हुई है। अहम सीन मुंबई, पुणे, रांची और कच्छ के रण में फिल्माए गए। प्रोडक्शन और कॉस्ट्यूम की टीम तारीफ के काबिल है, जो उन्होंने मीडियम बजट में भी फिल्म को ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। एक ग्रैंड लुकिंग फिल्म बनाने की कोशिश की गई है।

कोरोना के खिलाफ लड़ाई पर मसीहा

सोनू सूद बोले-हमें लोगों की मदद की पेशकश करने के लिए कई सिलेब्रिटीज और प्रभावशाली व्यक्तियों की जरूरत

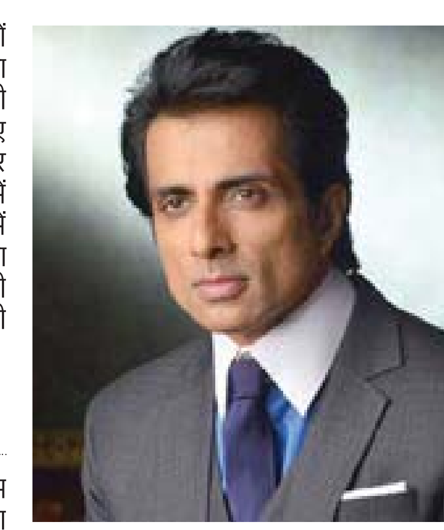

कोरोना का काल में कई तरह से जरूरतमंदों की मदद कर एक्टर सोनू सूद लोगों के लिए मसीहा बन गए हैं। उनके नेक काम अभी भी लगातार जारी हैं। कोरोना की दूसरी लहर में भी वे लोगों के लिए हॉस्पिटल बेड्स, इंजेक्शन, मेडिसिन और ऑक्सिजन का इंतजाम कर इस मुश्किल समय में उनकी मदद कर रहे हैं। अब हाल ही में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा है कि कोरोना से इस लड़ाई में हमारा साथ देने के लिए कई सिलेब्रिटीज और प्रभावशाली व्यक्तियों को आगे आकर लोगों की मदद करने की पेशकश करनी चाहिए।

मदद करने के इच्छुक लोगों को साथ लाने का प्रयास जारी

सोनू सूद ने कहा, 24×7 में फोन पर हूं और इस महामारी की व्यापकता का सामना करने की कोशिश कर रहा हूं। जरूरतमंद लोगों को हॉस्पिटल बेड्स, इंजेक्शन, मेडिसिन और ऑक्सिजन का इंतजाम कराने की कोशिश भी की जा रही है। मुझे पता है कि देश भर के लोग परेशान हैं और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सही चैनल खोजने की कोशिश कर रहे हैं। जरूरतमंदों को सहायता प्रदान करने के लिए हम मदद करने के इच्छुक लोगों को साथ लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मलाइका अरोड़ा को भाया इस एक्ट्रेस का स्टाइल

मलाइका अरोड़ा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। मलाइका अक्सर अपनी फिटनेस के साथ ही अपने स्टाइल स्टेटमेंट से भी सभी का दिल जीत लेती हैं। वहीं मलाइका को स्टाइल से इम्प्रेस करना भी आसान नहीं माना जाता है, हालांकि एक अभिनेत्री के स्टाइल से मलाइका काफी इम्प्रेस हैं।

जैंडेया का रेड कार्पेट लुक

दरअसल 2021 के ऑस्कर में अपने रेड कार्पेट लुक के साथ जैंडेया ने मलाइका अरोड़ा का ध्यान आकर्षित किया। मलाइका ने जैंडेया की फोटो को अपनी इंस्टा स्टोरी पर शेयर किया है। जैंडेया की फोटो को शेयर करते हुए मलाइका ने लिखा, सबसे अधिक स्टाइलिश।

मलाइका का फिट अंदाज

बता दें कि मलाइका को देखकर उनकी उम्र का अंदाजा लगाना लगभग नामुमकिन होता है। मलाइका अपने आप को फिट रखने के लिए खूब मेहनत भी करती हैं। मलाइका अक्सर जिम के बाद पैपराजी के कैमरों में कैद होती हैं। हालांकि इन दिनों कोविड के कारण ऐसा नहीं हो पा रहा है।

सोशल मीडिया पर दे रहीं फिटनेस टिप्स

गौरतलब है कि मलाइका आज कल सोशल मीडिया पर अपने छोटे छोटे वीडियोज शेयर करते हुए फिटनेस टिप्स दे रही हैं। मलाइका जिम के साथ ही योगा और पिलाटे भी करती हैं। ऐसे में सोशल मीडिया पर मलाइका अलग अलग योग बताती हैं और साथ ही उनके फायदे भी। मलाइका के इन वीडियोज को फैन्स पसंद करते हैं।

फायदे की फसल बना ग्वारपाठा

ग्वारपाठा या घीग्वार जो मूल रूप से जंगलों में अपने आप उगता पाया जाता है, अब व्यवस्थित रूप से खेतों में उगाया जाने लगा है। इसका उपयोग भारतीय आयुर्वेद एवं यूनानी शफाओं में पाचन संस्थान विशेष रूप से लीवर या जिगर संबंधी कमजोरी और व्याधियों को ठीक करने के अलावा चर्मरोगों व जलने एवं झुलसने के कारण त्वचा की खराबी को दूर करने तथा सौंदर्य प्रसाधनों में भी उपयोगी माना गया है। इसलिए अब लोगों का ध्यान इसकी व्यावसायिक खेती की ओर आकृष्ट हो रहा है।

बदलते परिवेश में जड़ीबूटियों पर आधारित दवाओं की मांग बढ़ी है जिसमें कई तरह की दवाएं व चेहरे पर लगाने वाली कई तरह की क्रीमें बाजार में आई हैं। आज के युग में कॉस्मेटिक हो या हर्बल से संबंधित दवाईयां लगभग सभी में ग्वारपाठा इस्तेमाल हो रहा है जिससे इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। इसकी फसल के लिए हल्की से मध्यम किस्म की दुमटए बलुई दुमटए कछारी एलूवियल मिट्टी वाले खेत ही चुनें। भारी और चिकनी मिट्टी में बरसात में पानी भरा रहने पर फसल खराब हो सकती है। खेत बखरने के बाद पाटा अथवा पठार चलाकर खेत को समतल करें। इसी समय 200 से 250 क्विंटल गोबर की अच्छी तरह पची और पकी हुई फरमेंटेड खाद या शहरी कम्पोस्ट खाद खेत में जगह-जगह ढेरियाँ बनाकर समान रूप से बिखेर दें। इसके बाद दाँतेदार बखर 'स्पाइक टुथ हेरो' या दतारी चलाकर उसे मिट्टी के साथ अच्छी तरह मिला दें। यदि उपलब्ध हो तो एक बार रोढोवेटर चलाएँ।

बुवाई के लिए डेढ़ से दो फुट की दूरी पर नौ से बारह इंच ऊँची मेढ़ व नालियाँ बनाएँ। शिशु पौधों को एक फुट की दूरी पर लगाया जाता है। लगभग 22 हजार पौधे एक एकड़ के लिए चाहिए। भारी व उपजाऊ मिट्टी में इन्हें कतार में दो फुट व पौधों के बीच डेढ़ फुट की दूरी पर लगाया जाना चाहिए। इस अंतर पर प्रति एकड़ लगभग 15 हजार पौधों की जरूरत होती है।

बोवनी के तत्काल बाद एक हल्की सिंचाई कर 20.25 दिन बाद 25 किलोग्राम यूरियाए 50 किग्रा सुपर फास्फेट व 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश मिलाकर नालियों में डालकर गुड़ाई कर हल्की सिंचाई कर दें। खरपतवारों को निकालने व पौधों के जड़ क्षेत्र में वायु का संचार के लिए आवश्यकतानुसार निंदाई व गुड़ाई करते रहें। जड़ें खुली दिखें तो उन पर मिट्टी चढ़ाते रहें।

ग्वारपाठा के पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती हैए परंतु खेत में हल्की नमी बनी रहे व दरारें नहीं पड़ना चाहिए। इससे पत्तों का लुबाब सूख कर सिकुड़ जाते हैं। बरसात के मौसम में संभालना ज्यादा जरूरी होता है। खेत में पानी भर जाए तो निकालने का तत्काल प्रबंध करें। लगातार पानी भरा रहने पर इनके तने, पत्ते और जड़ के मिलान स्थल पर काला चिकना पदार्थ जमकर गलना शुरू हो जाता है।

खुश्क मौसम में इनका विकास अच्छा होता है। पौधे को पूर्ण विकसित होने में आठ से बारह महीने लग जाते हैं। इसके पौधे की पत्तियों के पूरी तरह बढ़ जाने पर तेजधार वाले चाकू से काट लिया जाता है। इसी पौधे से पुनः नई पत्तियाँ आने लगती हैं। जब नई पत्तियाँ आने लगेए उस समय 40 किग्रा नत्रजनए 30 किलो स्फुर व 20 किग्रा पोटाश प्रति एकड़ से हिसाब से नालियों की मिट्टी के साथ मिलाकर सिंचाई कर दें।

एक बार लगाने पर तीन से पाँच साल तक उपज ली जा सकती है। पत्तियों को काटने के बाद दोनों तरफ से काँटे निकाल दें। इसके बाद पत्तों को खड़ा चीरकर बीच का लसीला गूदा अलग बर्तन में एकत्र कर लें। इसे धूप में सूखाकर या बिजली से चलने वाले यांत्रिक सुखावकों में रखकर सुखाया जाता है। यदि क्रीमए पेस्ट या आयुर्वेदिक द्रव या तरल उत्पाद बनाना हो तो इस लुबाब को ऐसे ही उपयोग में लाया जाता है। उस उत्पाद के अनुसार उसका प्रसंस्करण कर लिया जाता है।

यदि ग्वारपाठे के एक स्वस्थ पौधे से 400 ग्राम मिली गूदा भी निकले तो एक एकड़ के 20000 पौधों से 8000 किग्रा गूदा प्राप्त होगा। यदि इसका कम से कम बिक्री भाव 100 रु. प्रति किग्रा भी लगाया जाए तो आठ लाख रुपए होता है। ये सब अनुमानित आकलन है।

ग्वारपाठा कि उन्नत आर्गनिक जैविक खेती औषधीय पौधे

जलवायु

ग्वारपाठा उत्पादन के लिए उष्ण जलवायु कि आवश्यकता होती है ।

भूमि

यद्यपि ग्वारपाठा खेती असिंचित और सिंचित दोनों प्रकार कि मृदाओं में कि जाती है परन्तु इसकी सदैव असिंचित भूमि पर ही खेती कि जानी चाहिए इसकी खेती के लिए उचित जल निकास वाली भूमि होना चाहिए ।

भूमि कि तैयारी

इसकी जड़े बहुत गहरी नहीं जाती है अतरूइसके लिए बिशेष तैयारी कि आवश्यकता नहीं होती है देसी हल से या कल्टीवेटर से दो बार जुताई करने से काम चल जाता है प्रत्येक जुताई के उपरांत पाटा अवश्य लगाये ।

प्रजातियाँ

ग्वारपाठा कि कई प्रजातियाँ है जो मुख्यतरूअफ्रीका एअरब और भारत में पाई जाती है इसके प्राप्ति स्थल और देश के अनुसार इसकी कई प्रजातियाँ पहचानी गयी है जिनका संक्षिप्त उल्लेख आगे किया गया है।

एलोबेरा

यह ग्वारपाठा कि प्रमुख प्रजाति है जो सब जगह बिशेष रूप से मध्य प्रदेश एउत्तरप्रदेशएराजस्थान आदि प्रदेशो में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है ।

एलो इंडिका

यह ग्वारपाठा कि छोटी प्रजाति है जो भारत में चेन्नई से रामेश्वरम तक पाई जाती है इसे छोटा ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है इसके पत्ते 15.17 .5 से.मी.6.7 इंच से 30 से.मी.1 फुट तक लम्बे होते है जिनके किनारे सामान्यतः दन्तुर होते है इसका उपयोग विशेषतः दाह बिबंध और ज्वर रोगों के लिए किया जाता है ।

एलो फिरोक्स

यह एक अफ्रीका कि प्रजाति है जो भारत में नहीं पाई जाती है यह सबसे ऊँची प्रजाति है इसके पौधे 270.300 से.मी.9.10 फिट तक ऊँचे बढ़ते है इसमे सफेद रंग के फुल खिलते है ।

एलो एबिसनिका

यह प्रजाति काठियावाड़ व खम्बात कि खाड़ियों में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है इसके पत्ते अधिक चौड़े एवं पुष्प दंड अधिक लम्बे होते है जाफराबंदी एलुआ इस प्रजाति से प्राप्त किया जाता है ।

एलो रुपेसेंसा

यह प्रजाति लाल ग्वार पाठा के नाम से भी पहचानी जाती है यह बंगाल और सीमांत प्रदेश में पाई जाती है इस पर नारंगी और लाल रंग के पुष्प खिलते है इसके पत्तो का निचला भाग बैगनी रंग का होता है इसके गुदे को स्प्रिट में गलाकर लेप करने से बाल काले किये जाते है यह प्रजाति पाचक, किंचित उष्ण, उदर शूल मंदागिनी, अर्श बवाशिर आदि में बिशेष उपयोगी होते है पेट के कीड़े को मारने के लिए भी श्रेष्ठ है ।

जाफरावादी ग्वार पाठा

यह प्रजाति सौराष्ट्र के समुंद्र तट पर मिलती है इसके पत्ते तलवार नुमा स्वेत बिंदु युक्त होते है । उपरोक्त सभी प्रजातियों में अधिकतर एलोवेरा प्रजाति कि खेती कि जाती है ।

प्रवर्धन

ग्वार पाठा का प्रवर्धन धन कन्दो द्वारा किया जाता है इसके छोटे पौधे कि रोपाई जुलाई, अगस्त माह में कि जाती है वैसे इसे अक्तूबर तक रोपा जा सकता है धनकंदो के अलावा पुराने पौधे कि जड़ो के पास से ही कुछ छोटे पौधे निकलने लगते है वर्षा ऋतु में इन्ही पौधों को जड़ सहित निकाल कर बड़े खेतो में लगा दिया जाता है और इनका बिज रोपण सामग्री कहलाती है।

पौधों कि संख्या

ग्वार पाठा के एक एकड़ में कितने पौधे लगाये जाय यह एक अत्यंत महत्व पूर्ण प्रश्न है एक मीटर में इसकी दो पत्तियां लगाई जाती है और फिर एक मीटर खाली छोड़कर पुनरू एक मीटर में पक्तिंया लगेगी इस प्रकार ग्वार पाठा एक एकड़ में 14000 से 16000 तक पौधे लगगे प्रत्येक खंड के बाद एक मीटर जगह खरपतवार निकलने और पत्तियों कि कटाई के लिए रखते है ।

सिंचाई

यह वर्षा पर आधारित फसल है वर्षा न होने पर खेत कि हलकी सिंचाई करनी चाहिए।

खर पतवार

ग्वार पाठे के साथ अनेक खर पतवार पनपते है जो ग्वार पाठे के बिकास एवं बढ़वार पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है अतरूइनकी रोकथाम के लिए आवश्यकता नुसार निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए ।

कटाई

ग्वार पाठा कि फसल 12 महीनो में कटाई के लिए तैयार कि जाती है अतरू हर 3 माह में प्रत्येक पौधे कि 3.4 पत्तियां को छोड़कर शेष सभी पत्तियों को काट लेना चाहिए पत्तियों कि कटाई तेज धार वाली दरांती से करनी चाहिए अन्यथा पौधे के उखड़ने का भय रहता है ।

उपज

ग्वार पाठा कि प्रति हेक्टेयर 20000 किलोग्राम तजा पत्तियां मिल जाती है जिनका बर्तमान बाजार भाव 2रुपये से 5 रुपये प्रति किलो ग्राम होता है इन हरी पत्तियों को आयूरबैदिक दवाइयां बनाने वाली कंपनियों और प्रसाधन सामग्री निर्माताओ को बेचा जा सकता है । मुसब्बर अथवा अलुवा सार बनाकर भी बेचा जा सकता है ।

ग्वार पाठा कि खेती के विशेष लाभ

ग्वारपाठा को बेकार पड़ी भूमि पर उगाया जा सकता है ऐसा करने से भूमि का सदुपयोग हो जाता है और किसान को अतिरिक्त आय भी प्राप्त हो जाता है इसकी खेती के लिए खाद एकीटनाशक फफूंदीनाशक आदि कि कोई आवश्यकता नहीं होती है ग्वार पाठा बहु वर्षीय पौधा है अतः एक बार लगाने पर कई वर्षो तक उपज मिलती रहती है इस पर एलुवा बनाने व सुखा पावडर बनाने वाले उद्योगों कि स्थापना कि जा सकती है ग्वार पाठा कि जेल और सूखे पावडर कि बिश्व बाजार में भारी मांग होने के कारण इससे विदेशी मुद्रा अर्जित कि जा सकती है ।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सुरत, सचिन-हजीरा हाइवे पर चल रहे कलरटैक्स कंपनी के पास नाले में से माटी खनन मंजूरी या सेटिंग ?

यह तस्वीरें क्या कहते हैं

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से पूछा- कोरोना वैक्सीन खरीदने के लिए कहां से पैसा लाएंगे गरीब?

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

सुप्रीम कोर्ट ने कोरोना वैक्सीन की कीमत को लेकर सरकार से पूछा है कि गरीब लोग इसे खरीदने के लिए कहां से पैसे लाएंगे। कोर्ट ने यह भी सलाह दी है कि केंद्र सरकार एक राष्ट्रीय टीकाकरण मॉडल अपनाए और सभी नागरिकों को मुफ्त टीका देने पर विचार करे, क्योंकि गरीब लोग कोरोना का टीका नहीं खरीद पाएंगे। देश में कोविड-19 की मौजूदा स्थिति से जुड़े केसों की सुनवाई करते हुए जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, 'कीमत का मुद्दा बहुत गंभीर है।'

जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस एल नागेश्वर राव और जस्टिस रविंद्र भट ने टीकों की नई खरीद नीति पर सवाल उठाते हुए केंद्र सरकार से पूछा सभी वैक्सीन वह खुद क्यों नहीं खरीदती। कोर्ट ने यह भी कहा कि राज्यों को टीकों की खरीद अधिक कीमत पर करनी पड़ेगी। कोर्ट ने यह भी पूछा कि केंद्र और राज्य सरकारें उन लोगों का रजिस्ट्रेशन कैसे कराएंगी जो निरक्षर हैं या जिनके पास इंटरनेट की पहुंच नहीं है।

जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, 'आज आप कहते हैं कि केंद्र को मिलने वाले 50 फीसदी (टीका) से फ्रंटलाइन वर्कर्स और 45 साल से अधिक उम्र के लोगों का टीकाकरण किया जाएगा। शेष 50 फीसदी का इस्तेमाल राज्य और निजी अस्पताल करेंगे। 59.46 करोड़ भारतीय 45 साल से कम उम्र के हैं और इनमें कई गरीब और हाशिए की श्रेणी के हैं। वे वैक्सीन खरीदने के लिए कहां से पैसा लाएंगे?' जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने आगे यह भी कहा कि हम निजीकरण के मॉडल पर नहीं चल सकते हैं।

जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, 'हम जानते हैं कि कितने टीकों का उत्पादन हो रहा है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि आप (केंद्र) उत्पादन को बढ़ाएं। अतिरिक्त उत्पादन यूनिट्स के लिए जनहित शक्तियों के इस्तेमाल की जरूरत है। यह विचार राज्यों और केंद्र की आलोचना करने के लिए नहीं है। हम जानते हैं कि स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचा 70 से 100 वर्षों से विरासत में मिला है। हम अपने देश के स्वास्थ्य ढांचे के बारे में चिंतित हैं।' सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि प्राइवेट वैक्सीन उत्पादकों को इस फैसले का अधिकार नहीं दिया जा सकता कि किस राज्य को कितने टीके मिलें। गौरतलब है कि 1 मई से कोरोना टीकाकरण में 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को शामिल किया जा रहा है। इस फेज में राज्य सरकारों और निजी अस्पतालों को उत्पादकों से खरीद का अधिकार दिया गया है।

जस्टिस रवींद्र भट ने पूछा, 'एस्ट्राजेनेका अमेरिकी नागरिकों को वैक्सीन कहीं कम कीमत पर दे रही है। तो हमें क्यों इतनी अधिक कीमत देनी चाहिए? उत्पादक आपसे 150 रुपए ले रहे हैं लेकिन राज्यों से 300 या 400 रुपए। एक राष्ट्र के तौर पर हम इतनी कीमत क्यों दें? कीमत का अंतर 30 से 40 हजार करोड़ हो जाता है।'

महामारी की दूसरी लहर राष्ट्रीय संकट, इंटरनेट पर मदद मांग रहे लोगों पर कोई रोक नहीं लगाई जाए : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)।

सुप्रीम कोर्ट ने कोविड-19 की दूसरी लहर को ''राष्ट्रीय संकट'' करार देते हुए शुक्रवार को अधिकारियों को फटकार लगाई और कहा कि इंटरनेट पर मदद की गुहार लगा रहे नागरिकों को यह सोचकर चुप नहीं कराया जा सकता कि वे गलत शिकायत कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि सोशल मीडिया पर लोगों से मदद के आह्वान सहित सूचना के स्वतंत्र प्रवाह को रोकने के किसी भी प्रयास को न्यायालय की अवमानना माना जाएगा। न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव और न्यायमूर्ति एस रविंद्र भट की तीन सदस्यीय पीठ ने कहा, ''सूचना का निर्बाध प्रवाह होना चाहिए, हमें नागरिकों की आवाज सुननी चाहिए।'' शीर्ष अदालत ने केंद्र, राज्यों और सभी पुलिस महानिदेशकों को निर्देश दिया कि वे ऐसे किसी भी व्यक्ति पर अफवाह फैलाने के आरोप पर कोई कार्रवाई नहीं करें जो इंटरनेट पर ऑक्सीजन, बिस्तर और डॉक्टरों की कमी से संबंधित पोस्ट कर रहे हैं। पीठ ने कहा, ''ऐसे किसी पोस्ट को लेकर यदि परेशान नागरिकों पर कोई कार्रवाई की गई तो हम उसे न्यायालय की अवमानना मानेंगे।''

न्यायालय की टिप्पणी उत्तर प्रदेश प्रशासन के उस हालिया फैसले के संदर्भ में काफी मायने रखती है जिसमें कहा गया है कि सोशल मीडिया पर महामारी के संबंध में कोई झूठी खबर फैलाने के आरोप में राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत मुकदमा चलाया जाएगा। कोविड-19 प्रबंधन पर राष्ट्रीय नीति बनाने के लिए स्वत- संज्ञान मामले पर शीर्ष अदालत के समक्ष सुनवाई जारी है। न्यायालय ने टिप्पणी की कि अग्रिम मोर्चे पर कार्य कर रहे डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों को भी इलाज के लिए अस्पताल में बिस्तर नहीं मिल रहे हैं। पीठ ने कहा, ''हमें 70 साल में स्वास्थ्य अवसंरचना कीजो विरासत मिली है,वह अपर्याप्त है और स्थिति खराब है।'' शीर्ष अदालत ने कहा कि छात्रावास, मंदिर, गिरिजाघरों और अन्य स्थानों को कोविड-19 मरीज देखभाल केंद्र बनाने के लिए खोलना चाहिए। पीठ ने कहा कि केंद्र को राष्ट्रीय टीकाकरण मॉडल अपनाना चाहिए क्योंकि गरीब आदमी टीके के लिए भुगतान करने में सक्षम नहीं होगा।

न्यायालय ने पूछा, ''हाशिये पर रह रहे लोगों और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की आबादी का क्या होगा?क्या उन्हें निजी अस्पतालों की दया पर छोड़ देना चाहिए?'' इसने कहा कि सरकार विभिन्न टीकों के लिए राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम पर विचार करे और उसे सभी नागरिकों को मुफ्त में टीका देने पर विचार करना चाहिए। पीठ ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र चरमराने के कगार पर है और इस संकट में सेवानिवृत्त डॉक्टरों तथा अधिकारियों को दोबारा काम पर रखा जा सकता है। शीर्ष अदालत ने कहा कि निजी टीका उत्पादकों को यह फैसला करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए कि किस राज्य को कितनी खुराक मिलेगी। पीठ ने केंद्र को कोविड-19 की तैयारियों पर 'पॉवर प्वाइंट' प्रस्तुति की अनुमति दे दी।

कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच रेमडेसिविर की 4.5 लाख खुराक आयात करेगी सरकार

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

देश में कोरोना वायरस महामारी की दूसरी लहर के कहर के बीच सरकार ने वायरस रोधी दवा रेमडेसिविर की 4.5 लाख खुराक मंगाने के लिये आर्डर दिया है जिसमें से 75,000 शीशियों की पहली खेप शुक्रवार को भारत पहुंच जाने की उम्मीद है।उर्वरक एवं रसायन मंत्रालय ने एक वक्तव्य में यह जानकारी दी है। मंत्रालय ने कहा है कि देश में इस दवा की कमी को दूर करने के लिये सरकार ने रेमडेसिविर का आयात करना शुरू किया है। इसकी 75,000 शीशियों की पहली खेप शुक्रवार को भारत पहुंच जायेगी। देश में कोरोना वायरस संक्रमण के मामले तेजी से बढ़ने के साथ रेमडेसिविर की मांग कई गुणा बढ़ गई है। वायरस रोधी इस दवा का इस्तेमाल कोविड- 19 संक्रमण के इलाज में किया जाता है। मंत्रालय की विज्ञप्ति में कहा गया है कि सरकारी कंपनी एचएलएल लाईफकेयर लिमिटेड ने साढे चार लाख रेमडेसिविर की खुराक के लिये अमेरिका की कंपनी मैसर्स गिलीड साइंसिज इंक और मिस्र की दवा कंपनी मैसर्स इवा फार्मा को आर्डर दिया है। इसमें कहा गया है कि यह माना जा रहा है कि गिलीड साइंसिज अगले एक से दो दिन के भीतर 75,000 से लेकर एक लाख खुराक भारत भेज देगी।इसके बाद 15 मई अथवा उससे पहले एक लाख और दवा की शीशियां भारत पहुंच जायेंगी। विज्ञप्ति में कहा गया है कि वहीं इवा फार्मा शुरुआत में दस हजार खुराक भेजेगी और उसके बाद प्रत्येक 15 दिन में जुलाई तक 50 हजार शीशियां भेजती रहेगी। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय ने कहा है कि उसने भी देश में रेमडेसिविर की उत्पादन क्षमता को बढ़ाया है। उसने कहा कि 27 अप्रैल की स्थिति के अनुसार देश में लाइसेंस प्राप्त सात घरेलू विनिर्माताओं की उत्पादन क्षमता 38 लाख शीशी प्रति माह से बढ़कर 1.03 करोड़ शीशी प्रति माह तक पहुंच गई है। दवा कंपनियों ने पिछले सात दिन के भीतर 13.73 लाख शीशियों की देशभर में आपूर्ति की है। रेमडेसिविर की दैनिक आपूर्ति जो कि 11 अप्रैल को 67,900 खुराक थी वह 28 अप्रैल को बढ़कर 2.09 लाख खुराक तक पहुंच गई। देश में कोरोना वायरस के दैनिक संक्रमण के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। शुक्रवार को पिछले 24 घंटे के दौरान कोरोना संक्रमण के 3,86,452 नये मामले सामने आये हैं। इनमें मिलाकर संक्रमित हो चुके लोगों का कुल आंकड़ा 1,87,62,976 तक पहुंच गया। वहीं सक्रिय मामलों की संख्या 31 लाख के पार चली गई है।

कोरोना के हालात को लेकर आप विधायक की अपील, दिल्ली में लगाया जाए राष्ट्रपति शासन

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक शोएब इकबाल ने शुक्रवार को कहा कि दिल्ली में कोरोना वायरस संक्रमण की भयवाह स्थिति को देखते हुए यहां राष्ट्रपति शासन लगाया जाना चाहिए। पुरानी दिल्ली के मटिया महल विधानसभा क्षेत्र से छठी बार विधायक चुने गए इकबाल ने कहा कि न तो वह और न ही सरकार कोरोना से प्रभावित लोगों की कोई मदद कर पा रही है। उनकी मांग पर आप की तरफ से फिलहाल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

इकबाल ने एक वीडियो संदेश में कहा, ''एक विधायक होने के नाते मुझे शर्मिंदगी महसूस होती है क्योंकि मैं किसी के काम नहीं आ पा रहा हूं और हमारी सरकार भी लोगों के साथ खड़ी नहीं हो पा रही है। छह बार का विधायक होने के बावजूद मुझे कोई नहीं सुन रहा है और मैं किसी से संपर्क नहीं कर पा रहा।'' उन्होंने कहा, ''दिल्ली के हालात बहुत खराब है। मैं दिल्ली उच्च न्यायालय से आग्रह करता हूं कि दिल्ली में तत्काल राष्ट्रपति शासन लगाया जाए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो पूरे शहर में लाशें बिछ जाएंगी।''

आप विधायक ने कहा, ''मुझे रोना आता है। मुझे नींद नहीं आ रही है। लोग परेशान हैं, लोगों को ऑक्सीजन और दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। मैं एक दोस्त की मदद नहीं कर पा रहा हूं जो बिना ऑक्सीजन और दवा के अस्पताल में है।'' उल्लेखनीय है कि इकबाल ने 2020 के विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़ आप के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की।

अशोक गहलोत बोले, राजस्थान को केंद्र सरकार की मदद की जरूरत

जयपुर। (एजेंसी)।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशाक गहलोत ने ऑक्सीजन व दवाओं की कमी पर चिंता जताते हुए शुक्रवार को केंद्र सरकार से मदद मांगी। गहलोत ने कहा है कि राजस्थान को केन्द्र सरकार की मदद की जरूरत है। गहलोत ने ट्वीट किया,'' हमारा प्रयास है कि केन्द्र और राज्य सरकारें मिलकर कोरोना महामारी का मुकाबला करें। ऑक्सीजन और दवाईयों की कमी बेहद व्यथित करने वाली है। हम केन्द्र सरकार से बार-बार निवेदन कर रहे हैं कि अन्य राज्यों और विदेशों से मदद लेकर राजस्थान एवं अन्य राज्यों की भी सहायता करें।''

गहलोत के अनुसार राजस्थान में लगभग 1.70 लाख उपचाराधीन मरीज हैं। मानकों के अनुसार करीब 12 प्रतिशत मरीजों को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, यानी राजस्थान में करीब 20,400 मरीजों को आज ऑक्सीजन की आवश्यकता है। उनके मुताबिक उपचाराधीन मरीजों की गणना के आधार पर आज राज्य को 466 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आवश्यकता है लेकिन फिलहाल सिर्फ 265 मीट्रिक टन ऑक्सीजन ही मिल पा रही है और प्रदेश में करीब 201 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की कमी है। उन्होंने लिखा है कि राज्य में संक्रमित मामले देश के कुल संक्रमितों का पांच प्रतिशत हैं लेकिन ऑक्सीजन आवंटन सिर्फ 1.6 प्रतिशत है।

गहलोत के मुताबिक राज्य को एक सप्ताह के भीतर कुल 550 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आवश्यकता होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि अतः केन्द्र सरकार से पुनः अनुरोध है कि आपात स्थिति के तौर पर राज्य को 201 मीट्रिक टन ऑक्सीजन आज ही आवंटित की जाए। उन्होंने कहा है कि हो सकता है कि केन्द्र सरकार ने बेहतर प्रबंधन की दृष्टि से ऑक्सीजन और दवाइयों का नियंत्रण अपने हाथ में लिया हो, लेकिन राज्य यदि एक दूसरे की मदद करना चाहते हैं तो भारत सरकार की देखरेख में उन्हें इसकी छूट दी जाए। गहलोत के कहा,''हम पुनः केन्द्र से निवेदन करते हैं कि राजस्थान की सहायता करें। राजस्थान को केन्द्र सरकार की मदद की दरकार है।

कोरोना संकट के बीच मायावती का ट्वीट, राज्य सरकार से की यह मांग

लखनऊ। (एजेंसी)।

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने राज्य सरकार से शुक्रवार को मांग की कि वह उन सरकारी कर्मियों के आश्रितों को नौकरी एवं आर्थिक मदद मुहैया कराए, जिनकी पंचायत चुनाव में तैनाती के दौरान कोरोना वायरस से संक्रमित होने के कारण मौत हो गई। मायावती ने उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर निशाना साधते हुए ट्वीट किया, कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के चलते यदि उत्तर प्रदेश सरकार पंचायत चुनाव टाल देती, अर्थात उन्हें थोड़ा आगे बढ़ा देती, तो यह उचित होता और चुनाव ड्यूटी में लगे कई कर्मचारियों की मौत नहीं होती।

इन कमियों की मौत होना अत्यंत दुःखद है। मायावती ने मांग की कि राज्य सरकार उन सरकारी कर्मियों के आश्रितों को नौकरी एवं आर्थिक मदद मुहैया कराए, जिनकी पंचायत चुनाव में तैनाती के दौरान कोरोना वायरस से संक्रमित होने के कारण मौत हो गई। उन्होंने कहा, इसके साथ ही, अब कोरोना वायरस प्रकोप के गांव-देहात में भी काफी फैलने की आशंका है। ऐसी स्थिति में बसपा की सलाह है कि उत्तर प्रदेश सरकार शहरों के साथ-साथ देहात में भी कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए जरूरी कदम उठाए।

कोरोना के उपचार में मददगार साबित हो रहा 'आयुष 64' फार्मूला : आयुर्वेद मंत्री

जयपुर। (एजेंसी)।

चिकित्सा, स्वास्थ्य व आयुर्वेद मंत्री डॉ रघु शर्मा ने कहा कि देश के प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों के वैज्ञानिकों का मानना है कि आयुष मंत्रालय की केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान परिषद द्वारा विकसित एक पॉली हर्बल फार्मूला आयुष 64, लक्षणविहीन, हल्के और मध्यम कोविड-19 संक्रमण के उपचार के सहयोग में लाभकारी है। उन्होंने कहा यह दवा तथा अन्य आयुर्वेद दवाएं जैसे अश्वगंधा, गिलोय वटी, मुलेठी, अनुतैल आदि राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों व औषधालयों में उपलब्ध कराई जा रही है।

आयुर्वेद मंत्री ने शुक्रवार को कहा कि कोरोना महामारी के विश्वव्यापी कहर के बीच 'आयुष 64' दवा हल्के और मध्यम कोविड संक्रमण के रोगियों के लिए आशा की एक किरण के रूप में उभरी है। गौरतलब है कि आयुष 64 मूल रूप से मलेरिया की दवा के रूप में वर्ष 1980 में विकसित की गई थी और कोरोना संक्रमण के लिए काम में ली गई है। उन्होंने बताया कि हाल में आयुष मंत्रालय तथा

सीएसआईआर द्वारा हल्के से मध्यम कोरोना संक्रमण के प्रबंधन में आयुष 64 की प्रभावकारिता और इसके सुरक्षित होने का मूल्यांकन करने के लिए एक व्यापक और गहन बहु-केंद्र नैदानिक (क्लीनिकल) परीक्षण पूरा किया गया है।

डॉ. शर्मा ने बताया कि आयुष 64, सप्तपर्ण, कुटकी, चिरायता एवं कुबेराक्ष औषधियों से बनी है। यह व्यापक वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर बनाई गई है और सुरक्षित तथा प्रभावी आयुर्वेदिक दवा है। इस दवाई को लेने की सलाह आयुर्वेद एवं योग आधारित नेशनल क्लीनिकल मैनेजमेंट प्रोटोकॉल द्वारा भी दी गयी है जोकि आईसीएमआर की कोरोना प्रबंधन पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स के निरीक्षण के बाद जारी किया गया था।

केंद्रीय आयुर्वेदीय अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक डॉ. एन. श्रीकांत का मानना है कि जोधपुर और मेडिकल कॉलेजों सहित पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़, किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ, गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, नागपुर, दत्ता मेघे इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, नागपुरजैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में आयुष 64 पर अध्ययन जारी है। उन्होंने बताया कि अब तक मिले परिणामों ने हल्के और मध्यम कोरोना संक्रमणों से निपटने में इसकी भूमिका स्पष्ट तौर पर जाहिर की है। उन्होंने यह भी बताया कि सात नैदानिक (क्लीनिकल) अध्ययनों के परिणाम से पता चला है कि आयुष 64 के उपयोग से संक्रमण के जल्दी ठीक होने और बीमारी के गंभीर होने से बचने के संकेत मिले हैं।

नौकरशाही के जरिये कोविड नियंत्रण का मुख्यमंत्री योगी का प्रयोग असफल : भाजपा विधायक

बलिया (उप्र)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक सुरेंद्र सिंह ने शुक्रवार को कोरोना प्रबंधन में बदइंतजामी को लेकर प्रदेश सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा है कि नौकरशाही के जरिये कोविड पर नियंत्रण का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का प्रयोग असफल रहा है। बलिया जिले के बैरिया क्षेत्र के भाजपा विधायक सुरेंद्र सिंह ने आज पीटीआई- से बातचीत में कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का नौकरशाही के जरिये कोविड पर नियंत्रण का प्रयोग असफल रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में यह व्यवस्था की कमी ही माना जाएगा कि भाजपा के मंत्री व विधायक कोविड का शिकार हो रहे हैं तथा उन्हें समुचित चिकित्सा सुविधा तक नहीं मिल पा रही है।

विधायक ने कहा, व्यवस्था जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि केंद्रित होनी चाहिए न कि नौकरशाही केंद्रित लेकिन मुझे दुख है कि देश व सूबे में भाजपा की सरकार होते हुए भाजपा के मंत्री व विधायक दवा के अभाव में मर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि हाल ही में भारतीय जनता पार्टी के बरेली जिले के नवाबगंज विधानसभा क्षेत्र से सदस्य केसर सिंह, लखनऊ पश्चिम के विधायक सुरेश कुमार श्रीवास्तव, औरैया सदर के विधायक रमेश चंद्र दिवाकर की कोविड संक्रमण से मौत हो गई।

सार समाचार

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने तेलंगाना को ड्रोन से टीके पहुंचाने की अनुमति दी

नयी दिल्ली। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने शुक्रवार को तेलंगाना को प्रायोगिक रूप से टीका पहुंचाने के लिए ड्रोन के इस्तेमाल की अनुमति दे दी। हालांकि, यह प्रयोग दृश्यता सीमा तक ही सीमित होगा। मंत्रालय ने अपने बयान में स्पष्ट नहीं किया है कि प्रायोगिक रूप से ड्रोन के जरिये किस टीके को पहुंचाया जाएगा। मंत्रालय ने ट्विटर पर बताया कि उसने तेलंगाना सरकार को मानवरहित विमान प्रणाली (यूएएस) नियम-2021 में सशर्त छूट ''दृश्यता सीमा में प्रायोगिक रूप से ड्रोन का इस्तेमाल कर टीका पहुंचाने के लिए दी है। आदेश में स्पष्ट किया गया है कि यह छूट अगले एक साल या किसी अन्य आदेश तक ही दी गई है। उल्लेखनीय है कि मंत्रालय ने 22 अप्रैल को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) को कोविड-19 टीके को ड्रोन से पहुंचाने की व्यावहारिकता का अध्ययन करने की अनुमति दी थी।

दिल्ली में नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन बनाने का चल रहा था गोरखधंधा, पांच लोग गिरफ्तार

नयी दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने बड़ी संख्या में नकली रेमडेसिवीर इंजेक्शन बनाने के आरोप में बृहस्पतिवार को उत्तराखंड के कोटद्वार से पांच लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बताया कि आरोपी के पास से रेमडेसिविर के 196 नकली इंजेक्शन जब्त किए हैं और आरोपी पहले ही दो हजार नकली इंजेक्शन बेच चुके हैं। दिल्ली पुलिस के आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने ट्विटर पर इस बाबत सूचना साझा की। उन्होंने बताया कि आरोपी इस नकली इंजेक्शन को 25000 रुपये में बेचते थे।

31 मई तक अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर रहेगी पाबंदी, कोरोना के कारण बढ़ी अवधि

नई दिल्ली, एनआइ। भारत ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय कमर्शियल उड़ानों पर लगी रोक की अवधि और बढ़ा दी। अब इन उड़ानों के सफर पर 31 मई 2021 तक रोक लगा दी गई है। वहीं एयर ट्रैवल बबल व्यवस्था के तहत अंतरराष्ट्रीय पैसेंजर उड़ानों का संचालन जारी रहेगा। एक बार फिर देश में कोरोना संक्रमण के मामलों से अफरातफरी का माहौल है। ऐसे में एहतियात के तौर पर डीजीसीए ने विदेशी उड़ानों पर पाबंदी की अवधि को बढ़ाकर 31 मई कर दिया है। इसका मतलब है कि अब 31 मई तक लोग विदेश यात्रा नहीं कर पाएंगे।

कालाबाजारियों से जब्त ऑक्सीजन कंसेन्ट्रेटर छोड़ने के लिए अधिकारी तत्काल कदम उठाए : हाई कोर्ट

नयी दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे दिल्ली पुलिस द्वारा कालाबाजारियों से जब्त 170 ऑक्सीजन कंसेन्ट्रेटर रिलीज करानेके लिये तत्काल आवश्यक कदम उठाएं क्योंकि कोविड-19 मरीजों के इलाज के लिए उनकी जरूरत है। न्यायमूर्ति विपिन सांघी और न्यायमूर्ति रेखा पल्ली की पीठ ने अधिकारियों को एक बजे तक अनुपालन रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया है। वरिष्ठ अधिवक्ता सचिन पुरी ने अदालत को बताया खबर है कि दिल्ली पुलिस ने कालाबाजारियों से 170 ऑक्सीजन कंसेन्ट्रेटर जब्त किए हैं। उन्होंने अदालत से अनुरोध किया कि वह इन उपकरणों को मरीजों के इलाज में इस्तेमाल करने हेतु अधिकारियों को निर्देश दें। अदालत ने कहा कि कानूनी प्रक्रिया जारी रह सकती है लेकिन वक्त की मांग है कि अधिकारी बिना किसी देरी के इन उपकरणों को रिलीज करें। पीठ ने कहा, '' हम राज्य को निर्देश देते हैं कि इन उपकरणों को अवमुक्त करने के लिए तुरंत कदम उठाए।'' पीठ ने कहा कि उसने इसी तरह का आदेश बृहस्पतिवार को पारित किया था जिसमें आप सरकार के राजस्व विभाग के उपायुक्त को जब्त रेमडेसिविर इंजेक्शन को जारी करने का निर्देश दिया गया था जिसे पुलिस ने जमाखोरों एवं कालाबाजियों से जब्त किया था और जिनका इस्तेमाल कोविड-19 मरीजों के इलाज में होता है।

उत्तर प्रदेश में कोरोना से 332 और लोगों की मौत, संक्रमण के 34,626 नए मामले

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में पिछले 24 घंटों के दौरान कोविड-19 से सर्वाधिक 332 लोगों की मौत हुई है तथा 34,626 नए मरीजों में कोरोना वायरस के संक्रमण की पुष्टि हुई है। अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने शुक्रवार को पत्रकारों को बताया कि पिछले 24 घंटों के दौरान राज्य में कोविड-19 से 332 लोगों की मौत हो गई। इसके साथ ही राज्य में अब तक महामारी में जान गंवाने वालों की संख्या बढ़कर 12,570 हो गई है। उन्होंने बताया कि इस अवधि में संक्रमण के 34,626 नए मामले आए हैं जिन्हें मिलाकर प्रदेश में अबतक कुल 12,52,324 लोगों के संक्रमित होने की पुष्टि हो चुकी है। प्रसाद ने बताया कि पिछले 24 घंटों में बीमारी से कुल 32,494 लोग ठीक हुए हैं। इसके साथ ही अबतक 9,28,971 मरीज स्वस्थ होकर अपने घर जा चुके हैं। प्रसाद के मुताबिक राज्य में इस समय 3,10,783 मरीज उपचाराधीन हैं जिनमें से 2.43 लाख मरीज गृह पृथकवास में अपना उपचार करा रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौर्या (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/751000 (Subject to Surat jurisdiction)